॥ श्रीः ॥

केरलरत्नकम्

महेन्द्रगढ़निवासिना

पं. चुन्नीलालेन सम्पादितम्

इन्द्रप्रस्थनिवासिना

तच्छिष्येण ला० मदनलालगुप्तेन

प्रकाशितम्

पं० कुञ्जविहारीलालशर्म्मणा इन्द्रप्रस्थे
स्वकीये रत्नप्रेसाख्य मुद्रणयन्त्रालये
मुद्रितम् ।

शाके १८४२

प्रथमावृत्तिः ५०० } सं० १९७७ { मूल्यम् ।=)

॥ श्रीः ॥

केरलरत्नकम्

महेन्द्रगढ़निवासिना

पं. चुन्नीलालेन सम्पादितम्

इन्द्रप्रस्थनिवासिना

तच्छिष्येण ला० मदनलालगुप्तेन

प्रकाशितम्

पं० कुञ्जविहारीलालशर्म्मणा इन्द्रप्रस्थे
स्वकीये रत्नप्रेसाख्य मुद्रणायन्त्रालये
मुद्रितम्।

शके १८४२

सर्वाधिकाराः ग्रन्थकर्त्रा संरक्षिताः

प्रथमावृत्तिः ५०० | सं० १९७७ | मूल्यम् ।=)

॥ श्रीः ॥

गुणत्रयात्मिकां मायां धारिणींजगतां त्रयम् ।
प्रकृतिं ब्रह्ममयीं वन्दे वन्दनीयां सुरासुरैः॥ १ ॥
ज्योतिः शास्त्रे सन्ति शाखास्नेकास्तेषां मध्यया चमत्काररूपा ॥
विशेश्चिन्त्या वर्गवर्ण क्रियाभि र्भेदैर्बहुभिः करलैसागृहीता ॥ २ ॥
दृष्ट्वा तत्रतु ग्रंथ पुंजमनघः श्री चुन्निलालः सुधीः ।
शुभ्रं केरल रत्नकं वितनुते हिन्दीगिरा गुम्फितम् ॥
कंठ भातु सदैव दैव विदुषां मोदाय श्रीलब्धये ।
संशोध्यो विबुधै रनल्प मातिभि र्वैगुण्ययुक् चेत्क्वचित् ॥ ३ ॥

केरल
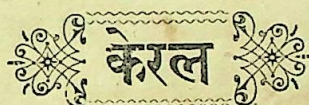
इस नाम की एक सम्प्रदाय तंत्र ग्रंथों में कहीं२ वर्णित है जिससे जाना जाता है कि काश्मीर प्रान्त के किसी स्थान में केरल नामधारी मुनिका प्रादुर्भाव हुआ जिनके नाम से यह शास्त्र प्रसिद्ध है। कब और किससमय में हुये? इन बातों में काल गंवाना मेरी बुद्धि सम्मत नहीं; क्योंकि मेरे ध्यान में चाहे किसी नाम से पुकारा जाता क्यों न हो इस शास्त्र का मूल केरल मुनि की उत्पत्ति से बहुत पहिले फूट ही न चुका था वरन डाल पात फल फूल युक्त भी हो चुका था।

साम वेद के स्वरों की प्रक्रिया में अङ्कगणना का अस्तित्व तदनन्तर जैन मत के आचार्यों का "आद्यं चूड़ामणिः सारं स्वयं जैनेन्द्र भाषितम्" यह कथन इसकी प्राचीनता के सिद्ध करने में प्रमाण हैं।

मीमांसा शास्त्र के रचयिता मुनिवर्य्य जमिनी ने अपने जातक संबंधीसूत्र में कटपयादि क्रम से स्थानीय संख्या बांधने में जिस शिवताण्डव को आधारभूत जान प्रमाणित माना उसका कितना ही अंश हस्तलिखित मेरे पास है वह स्पष्ट विदित करता है कि यह ग्रंथ सर्वथा केरलीय मर्यों से आच्छादित है तथा इसके निर्माता दक्षिणामूर्त्ति ऋषि हैं जिन्हेंशिवावतार मान कर ही कामा के नंदरामजी ने "श्रीरुद्रोक्तःकेरलिः" कहा हो तो अचरज नहीं, दक्षिणामूर्त्ति के शिष्य केरलनामक इसी से कहा जा सक्ता है कि गुरु आज्ञानुसार पुरानी परिपाटी से कुछ फेर फार कर नई रीति से पिंडक्रमच लाने में अग्रेसर हो शायद केरलमुनि ने अपने नाम पर इस शास्त्र को विख्यात कर यश लाभ किया हो ?

अस्तु ! इस बात के कहने में कोई सन्देहनहीं हो सकता कि यह शास्त्र अपने चमत्कारपूर्ण गुणों के कारण समग्र भारतीय जातियों से चाहे वैदिक हों चाहे अवैदिक पूर्णतया आदरित और सम्मानित है, इसलिये अब हम सब वखेड़ों को छोड़ इसकी मूल भूता और प्रश्नक्रम में सर्वथा उपयोगिनी श्रेणी का विवर्ण ही प्रथमारम्भ में उचित जान लिखते हैं।

श्रेणी का विवर्ण।

व्याकरण में पद और न्याय में पदार्थ ज्ञान मुख्य है दोनों से ही कार्य्य का निर्वाह और व्यवहार सिद्ध होताहै यदि इन्हेंप्रकृति पुरुष या कार्य्य कारण रूप तथा शिवशक्ति आदि नामों सेपुकार लें तो असंगत नहीं, दोनों का सम्बन्ध परस्पर में इतना घनिष्ट है कि जिसका कहना जीभ कीशक्ति और सामर्थ्य से बाहर

है; जिस प्रकार शरीर और प्राणको अन्न और अन्नादमान तैत्तिरियोपनिषत् में अपना सारभूत साम गान गाया है वह ही ठीक पद और पदार्थ की गति है, इसमें कोई शंका कर ही नहीं सकता कि जिस भांति बीज में अंकुर और अंकुर में बीज विद्यमान है इसी भांति शब्द में शब्दार्थ और शब्दार्थ में शब्द शक्ति प्रधान मौजूद है, इसी लिये केरल में शब्द प्रमाण कर प्रष्णा कर्ता के मुंह से निकले हुए वर्णों में ही उसका शुभाशुभ और भाव निश्चित मान उसके जानने की चेष्टा उतने ही अक्षरों पर की है, क्योंकि शब्द में नाद और नाद में विन्दु तथा विन्दु में जगत् गोरखनाथ आदि महापुरुषों ने माना है, उसी को अवलंबन कर पश्चिमीय ज्योतिषियों ने जिस भांति चारविन्दुओं की तरीक़ शकल का निर्माण कर उम्मुल अशकाल अर्थात् अन्य शकलों की माता रमल शास्त्र में प्रसिद्ध कर लिया उसी भांति बहुत पहिले हमारे पूर्वजोंने यदि शब्दसे ही इस केरल शास्त्र को अवतरण किया तो क्या उत्तमोत्तम युक्ति संगत नहीं ? शब्दार्थ निश्चित ही सब भांति के शुभाशुभ बताने को समर्थ है ऐसा अनुमान कर २ केरल में पृच्छक के मुंह से निकले हुए अक्षरों को श्रेणी और उनकी संख्या को श्रेणी की संख्या नियत की है जिसका वर्णन आगे लिखा जा रहा है ।

शब्द शास्त्र में सोलह स्वर हैं और तेतीस व्यंजन, तेतीस व्यंजनों में सात वर्ग गिने जाते हैं जिनमें पहिले पांच वर्गों में प्रत्येक वर्ग के पांच२ वर्ण और अंतिम दो वर्गों में चार२ वर्ण हैं; यथा कखगघङ= कवर्ग, चछजझञ = चवर्ग, टठडढण = टवर्ग, तथदधन =त बर्ग, पफबभम=पवर्ग, यरलव,य वर्ग, और शषसह श-वर्ग, सोलह स्वरों में ऋ ॠ ऌ ॡ खंड स्वर जानकर इस शास्त्र के

निर्माताओं ने छोड़ शेष बारह स्वर और बारह ही मात्रा मानी हैं बारह स्वरों में एक अवर्ग कहा गया है, इसी से वर्ग संख्या ८ हैं, पर केरल मत में अ-वर्ग के दो भेद हैं, पहिला अ आ इ ई उ ऊ और दूसरा ए ऐ ओ औ अं अः—जिस जगह आठ वर्ग का कथन हो वहां आठ और जहां कुछ कथन न हो वहां इस शास्त्रानुकूल ६ वर्गसमझें।

पृच्छक अर्थात् प्रश्न पूछनेवाले के मुंह से प्रश्न बतानेवाले के सम्मुख आतेही जो अक्षर निकलें उन्हें श्रेणी कहते हैं, इसश्रेणी को सावधानी से स्लेट, पाटी या कागज़ पर लिखलेना चाहिये। विशेषतः वाक्य के पहिले अंश को अर्थात् श्रेणी के प्रथम टुकड़े को प्रश्न का आधार मानना चाहिये, इसी पर शुभाशुभ विचार निर्भर हैं।

श्रेणी के समझने में व्यवधान होजाय तो प्रश्न बतानेवाले का कर्तव्य हैकि वह पूछनेवाले से किसी फल फूल महात्मा राजा देवता या नदी का नाम लिवाले और उसे ही श्रेणी समझले।

गर्गादि प्राचीनों के ग्रन्थों पर जो टीकायें रची गई हैं उनमें विशेषतः फल फूलों के नाम पर ही उदाहरण पाये जातेहैं, परंतु केरलभाष्य में केवल पुष्प के नाम को ही इसका उपयोगी माना है, "प्रागुदङ्मुखपृष्टुर्वाग्गुत्थकुसुमाद्दारम् । गृहीत्वा प्रश्न विद्यायां फलं ज्ञेयं मनीषिभिः" ॥

पूछनेवाले के मुंह से निकले हुये वाक्य के खंड में या उस के कहलाये हुये फल पुष्प के नाम में जितने अक्षर हैं वही श्रेणी की संख्या है।

श्रेणी में पहिले दो अक्षरों पर निर्धारित की हुई नव संज्ञायें ।

श्रेणी के आदि में चाहे किसी वर्ग के हों पहिले और तीसरे वर्ण क्रमवा व्युत्क्रम से विद्यमान् हों तो संयुक्त संज्ञा का प्रश्न होता है, जैसे "चंपा" इसमें दोनों वर्ण अपने २ वर्ग च और प के प्रथमाक्षर हैं। "गुलाब" इसमें अपने २ वर्ग के तृतीयाक्षर हैं, "केला" इसमें एक वर्ण वर्गका पहिला और दूसरा तृतीयाक्षर है, यह नियम नहीं हैकि दोनों वर्ण एकही वर्ग के हों या भिन्न २ वर्गों के।

श्रेणी के आदि में वर्ग के दूसरे और चोथे वर्ण हों तो असंयुक्त है जैसे "भर्तृहरि" इसमें भ, अपने वर्ग का चौथा और र, अपने वर्ग का दूसरा अक्षर है, "खरबूजे" इसमें ख, अपने वर्ग का दूसरा और र, भी दूसरा ही है, एवं भिन्डी, भघेल आदि श्रेणी में यदि क्रमानुसार वर्ण हों तो अभिहित संज्ञक प्रश्न है, जैसे "चौथमल" में पहिले वर्ग का प्रथमाक्षर और दूसरा द्वितीय वर्ण है, "खजले" में पहिले वर्ग का द्वितीयाक्षर और दूसरा तृतीयाक्षर है, "गढ़वाल" में पहिला वर्ग का तृतीयाक्षर और द्वितीय वर्ग का चौथा अक्षर है "भीम" में पहिले वर्गका चौथाऔर दूसरा वर्ग का पाचवां वर्ण होने से क्रमानुसार ही हैं।

श्रेणी में पहिला अक्षर अपनेवर्ग का पहिला और दूसरा अपने वर्ग का पाचवां या चौथा अक्षर होतो अनभिहित संज्ञक प्रश्न है, जैसे यमुना, कुहक आदि में, श्रेणी का प्रथमाक्षर वर्ग का दूसरा और दूसरा अपने वर्गका पंचम वर्ण हो जैसे "छम्मों" में; श्रेणी

में प्रथमाक्षर वर्ग का तृतीयाक्षर और द्वितीयाक्षर अपने वर्गका पंचमाक्षर हो तोअनभिहित संज्ञक प्रश्न ही है, जैसे "जनमेजय,,

श्रेणीका प्रथमाक्षर वर्गका चौथा और द्वितीयाक्षर वर्गका पहिला वर्ण हो तो अभिघात संज्ञक प्रश्न है जैसे "घंटेश्वर" में घ वर्गका चतुर्थ और ट वर्गका आदिम वर्ण है इसी भांति श्रेणी का आदिम वर्ण वर्गका दूसरा और द्वितीयाक्षर वर्गका पहिला हो तोभी अभिघात है; जैसे ठाकुर में एवं प्रथमाक्षर वर्ग का तीसरा और द्वितीयाक्षर वर्ग का दूसरा वर्ण हो तोभी अभिघात है, जैसे "गौरी" अथवा श्रेणी का प्रथमाक्षर वर्ग का चौथा और द्वितीयाक्षर तीसरा हो तोभी अभिघात संज्ञक प्रश्न है, जैसे झाला शब्द में झ वर्ग का चौथा और ल, तीसरा है।

श्रेणी में प्रथमाक्षर वर्ग का पांचवां वर्ण हो और द्वितीयाक्षर चाहे वर्ग के प्रथम से चतुर्थ तक कोई भी हो तो अनभिघात है जैसे"नर्मदा" महानदी महेश्वरादि शब्दों में।

पूर्वोक्त छै संज्ञायें श्रेणी के आदिम व्यंजन वर्णों से देखी जाती हैं अर्थात् क, च, ट, त, प, य, श, इन सात वर्गों केवर्णों पर ही निर्भर हैं परन्तु यदि श्रेणी का आदिम वर्ण स्वर हो तो इस भांति संज्ञा जाननी, कि श्रेणी के आदि में अ इ ए ओ में से कोई भी प्रथमाक्षर हो तो आलिंगित संज्ञक प्रश्न है यथा अनार, इमली, एकादशी ओसर इत्यादि शब्दों में।

आ ई ऐ औ श्रेणी के आदिम वर्ण हों तो अभिधूमित और उ ऊ अं अः से दग्ध संज्ञा समझनी यथा आम ईषावास्य ऐतरेय औरंगाबाद आदि की अभिधूमित और उमा, ऊषा उमराव अंगरेज आदि दग्ध संज्ञक शब्द हैं।

पूर्वोक्त संज्ञाओं का साधारण शुभाशुभ ।

संयुक्त संज्ञा में धन लाभ पुत्र सुख और स्त्री आदि का उत्तम चितवन हो । असंयुक्त में अधम मुसाफरत आदि, अभिहित से दूसरों के द्वारा कल्याण का लाभ; अनभिहित में मरने जीने का सन्देह, अभिघात में ऋण या कैद का भय, अनभिघात में किसी रिश्तेदार से झगडे टंटे का खयाल, आलिंगित में जायदाद या मित्र मिलने की चिन्ता, अभिधूमित में शत्रुभय और दग्ध में रोगी के मरने का खयाल ।

इन नौ संज्ञाओं की जगह जहां कहीं हम संयुक्तादि आठ संज्ञा बतावें वहां अभिघात और अनभिघात दोनों की एक ही जाननी ।

उत्तरोत्तरादि संज्ञा ।

चंद्रोन्मीलन—वर्ग संख्या भवेच्चाष्टौ विषमे चोत्तरं शुभम् । उत्तरोत्तर ज्ञातव्यं वर्ग प्रथम पंचकम् ॥ १ ॥ इत्यादि वाक्यों से अ ए क च ट त प य श उत्तरोत्तर, इ ओ ग ज ड द ब ल स उत्तर, आ ऐ ख छ ठ थ फ र ष अधर, ई औ घ झ ढ ध भ अधराधर, उ ऊ अं अः ङ ञ ण न म दग्ध संज्ञक हैं ।

श्रेणी में वर्ण उत्तरोत्तर और मात्रा भी वैसी ही होतो उत्तरोत्तरोत्तरोत्तर अत्यंतशुभ है; वर्ण उत्तरोत्तर और मात्रा उत्तर हों या मात्रा उत्तरोत्तर और वर्ण उत्तरहो तो उत्तरोत्तरोत्तर प्रश्नशुभ हैयदि वर्ण उत्तर और मात्रा भी वैसी ही हो तो उत्तरोत्तर खासा, यदि वर्ण उत्तरोत्तर और मात्रा अधरहो तो उत्तरोत्तराधर मध्यम शुभ, वर्ण उत्तर और मात्रा अधर होतो उत्तराधर मध्यम है मात्रा या वर्ण में

एक अधराधर और दूसरा उत्तर होतो अधराधरोत्तर मध्यम अशुभ है वर्ण मात्रा दोनों के अधर होनेसे अधराधर नेष्ट और दोनों के अधराधर होनेसे अधराधराधराधर अत्यन्त नेष्ट है वर्ण मात्रा में एक के उत्तरोत्तर या उत्तर और दूसरे के दग्ध होनेसे उत्तरोत्तर दग्ध या उत्तर दग्ध प्रश्न मध्यम है अधराधर या अधर दग्ध होने से नेष्ट और दोनों के दग्ध होनेसे अत्यन्त नेष्ट फल है।

साधारण संज्ञायें।

वर्गोंके प्रथमाक्षर क च ट त प य श की संज्ञा जीवित अंतिम अक्षरङञणनमवहकीमृतक, अवर्ग, स्वेत, कवर्गलाल, चवर्गपीला, टवर्ग हरित, त पवर्ग सुनहरी, पवर्ग धूम्र, यवर्ग हरित और शबर्ग कालेरंग का है मात्राओंमें दोदो कारंग क्रमसे सफेद पीला धूम्र लाल और चितकबरा है, अनुस्वार का काला और विसर्ग का धोया हुआ। र ल व ट ठ ढ चूधे, ङ ञ ण न म अंधे, इ ई ष म ख स गूंगे, क ख ग घ अ आ गंजे, श स ह बहिरे उत्तर सुगंधि बाले और अधर दुर्गंधि वाले। उत्तरसे खाने योग्य अधर से अयोग्य।

वेलाओं की संज्ञा।

शुक्ल पक्षमें दोपहर से पहिले औत्तरी पेला पीछे आधरी संध्या समय तक, रात्रिके पूर्वार्द्ध में आधरी उत्तरार्द्ध में औत्तरी इससे विपरीत कृष्ण पक्षमें दिनके पूर्वार्द्ध में आधरी उत्तरार्द्ध में औत्तरी रात्रिके पूर्वार्द्ध में औत्तरी, और पश्चिमार्द्ध में आधरी।

नाना ग्रंथान्समालोच्य चुन्नी बालेन धीमता।
कृतः संज्ञा प्रकरणोयं श्रीगणेश प्रसादतः॥ १॥

॥ द्वितीय प्रकरणम् ॥

पिंडबनाने की विधि ।

संयुक्त अथवा असंयुक्त संज्ञाका प्रश्न हो तो वर्णांक इस क्रम से हैं।

अ ४ आ ५ इ ६ ई ७ उ ८ ऊ ९ ए १० ऐ ११ ओ १२ औ १३ अं १४ अः १५ । क ५ ख ६ ग ७ घ ८ ङ ९, च ६ छ ७ ज ८ झ ९ ञ १०, ट ७ ठ ८ ड ९ ढ १० ण ११, त ८ थ ९ द १० ध ११ न १२, प ९ फ १० ब ११ भ १२ म १३, य १० र ११ ल १२ व १३, श ११ ष १२ स १३ ह १४। अभिहितादि चार संज्ञाओं में बरणांक इस क्रम से हैं, अ१ आ २ इ ३ ई ४ उ ५ ऊ ६, ए २ ऐ ३ ओ ४ औ ५ अं ६ अः ७, क ३ ख ४ ग ५ घ ६ ङ ७, च ४ छ ५ ज ६ झ ७ ञ ८, ट ५ ठ ६ ड ७ ढ़ ८ ण ९, त ६ थ ७ द ८ ध ९ न १०; प ७ फ ८ ब ९ भ १० म ११, य ८ र ९ ल १० व ११, श ९ ष १० स ११ ह १२। आलिंगित आदितीन संज्ञाओं में वर्णांक-अ १ आ २ इ ३ ई ४ उ ५ ऊ ६ ए ७ ऐ ८ ओ ९ औ १० अं ११ अः १२। क २ ख ३ ग ४ घ ५ ङ ६; च ३ छ ४ ज ५ झ ६ ञ ७; ट ४ ठ ५ ड ६ ढ ७ ण ८; त ५ थ ६ द ७ ध ८ न ९; प ६ फ ७ ब ८ भ ९ म १०; य ७ र ८ ल ९ व १०; श ८ ष ९ स १० ह ११।

पूर्वोक्त नव संज्ञाओं में से जिस संज्ञाका प्रश्न हो उसीके अनुसार वर्णोंके अंकोंको जोड ले तथा मात्राके अंक जोड जो राशि होवे वही पिंड संज्ञक है। संयुक्त संज्ञामें पिंडको दूना और असं-

युक्त में चौगुना करना अभिहित में आठगुणा और अनभिहित में तेरह गुणा, अभिघात में पन्द्रह गुणा और अनभिघात में १७ गुणा, आलिंगित प्रश्न में १से अभिधूमित में २से और दग्ध में ३से गुणा कर स्फुट पिंड बनाले ।

॥ विशेष बात ॥

चन्द्रोन्मीलन में "ह्रस्व मात्रा चतुष्कंतु यस्मिन्वर्णेच दृश्यते आलिंगितं विजानीयाद् दीर्घमात्राभिधूमिके" कहकर यह भी जताया है कि ह्रस्वस्वरयुक्त वर्णकी आलिंगित संज्ञा और दीर्घस्वरयुक्त की अभिधूमित संज्ञा जाननी । इसका प्रयोजन यह है कि आलिंगित प्रश्न होतो पिंड में "आलिंगिते तत्कुयुतं कुहीनं दग्धेभिधूमे" इस उक्ति के अनुसार एक और मिलादे अभिधूमित में १ घटादे तो स्पष्ट पिंड होजायगा ।

यह पिंड बनाने की विधि सभी केरलाचार्य्योंको सम्मत है जिसका उदाहरण दिखाते हैं । चम्पक–इस श्रेणी में प्रथमाक्षर "च" अपने वर्गका प्रथमाक्षर है इसी प्रकार द्वितीयाक्षर 'प" भी अपने वर्गका प्रथम है इसीसे संयुक्त संज्ञक प्रश्न है उसके वर्णों मेंसे वर्णांक च का ६, प के ९, क के ५, सारे वर्णांक जुडकर २० हुए, मात्रा अ के १४ प्रकार की मात्रा अ के४ , ककार की मात्रा अ के अंक ४, समग्र २२ मात्रांक हैं, इनको वर्णांक २० में जोडे तो हुए ४२, संयुक्त संज्ञाके कारण दुगुना किया तो ८४ हुए, श्रेणीका आदिम मात्रा दग्ध है इस कारण १ घटाया स्पष्ट पिंड ८३ हुआ ।

पिंड से साधारण शुभाशुभ ।

पिंड को भाग ३ का दे शेष १ से भूतकाल, २ से वर्तमान शून्य से भविष्यत्। वर्ण पिंड़ को श्रेणी की संख्यासे गुण स्व-रांक जोड भाग २ का दे शेष १ से शुभ, शून्यसे अशुभ, जैसे चम्पक इस में वर्ण पिंड २०, श्रेणी में तीन अक्षर हैं इससे तिगुना किया ६०,स्वरांक २२ जोडे ८२, भाग २से शेष शून्य रहा फल अशुभ है ।

पूर्वोक्त पिंडविधि कहते हुए भी हम यह कहे विना नहीं रह सकते कि प्राचीन कालके आचार्य्यों से इसमें कुछ मतभेद हुआ है, जैसा कि उस पिंडक्रमसे ज्ञात होता है जो भगवान गर्गने मनोरमा में लिखा है ।

उन्होंने पिंड विधि इस प्रकार कही है कि–'वर्ग वर्णप्रमाणं च सस्वरं ताडितं मिथः। पिंड संज्ञा भवेतस्य यथा भागैस्तुकल्पना ॥१॥ अर्थात् वर्ण अपने वर्ग प्रमाण सहित और स्वरके जोड़को परस्पर में गुणाले इसी की पिंड़ संज्ञा है जहां जिस रीतिका भाग हो वैसी ही फल कल्पना करे, जैसे चंपा इस प्रश्न श्रेणी में वर्ग च की संख्या ३ वर्ण संख्या १ जोडे तो ४ हुए, मात्रा अंके वर्ग अ की संख्या १ वर्ण की संख्या १५ जोडे तो १६ हुए, मात्रा और वर्ण दोनों की योग संख्या २० आदिम अक्षर "च" की संख्या है । इसी भांति पामें वर्ग प की संख्या ६ वर्ण संख्या १ जोड वर्णांक ७, मात्राकेवर्ग अ की संख्या १ वर्ण संख्या २ जोड़ मात्रांक ३, मात्रा के अंक ३ और वर्णांक ७ सात को जोड़े तो १० दूसरे अक्षर पा की संख्या हुई, पहिले और

दूसरे अक्षर की संख्या २० । १० को परस्पर गुणन किया तो २०० पिन्ड हुआ।

इस रीति को दूसरी प्रकार भी वर्णन की है। यथा बोर, इस प्रश्न श्रेणी में प वर्ग की संख्या ६, द्वितीयाक्षर के वर्ग य की संख्या ७, दोनों का जोड़ १३ वर्गांक है, प्रथमाक्षर ब की संख्या तीसरी है इसलिये ३, वर्ग संख्या ६ में युक्त करी वर्ण संख्या ९ हुई; इसी भांति र की संख्या ९ जोड़ने से वर्णांक १८, मात्रा "ओ" की संख्या १४ अ की २ योग १६ वर्णांक १८ में मात्रांक १६ जोडे तो ३४ हुये वर्गांक संख्या १३ से गुणन किये ४४२ हुए

तीसरा प्रकार।

कितनेही बुद्धिमान इस प्रकार भी पिन्ड साधन करते हैं कि दाड़िम इस प्रश्न श्रेणी में वर्णांक ५ । ४ । ६ और वर्णांक ३ । ३ । ५ हैं इनके योग से द ड म के ८ । ७ । ११ वर्णांक स्फुट हुए इनका जोड़ २६ यह वर्ण पिन्ड है; मात्रा के अंक २ । ३ । १ इनका योग ६ वर्णांकों के योग में युक्तकिया तो ३२ इनदोनों (२६ तथा ३२) को परस्पर में गुणनकिया तो ८३२ हुए दूना किया तो पिन्ड १६६४ है, इसप्रकार अनेक पिन्ड विधि होने पर भी हमने जिस कार्य में जैसे पिन्ड की आवश्यकता जानी है वहां वैसेही पिन्ड का उदाहरण दिखाया है, तथापि हमें यह लिखना ही परमावश्यकीय है कि प्राचीन आचार्यों के मत को लोगों ने अपनी बुद्धिकल्पना द्वारा नाना भांति से फेर फार की है यथा "दाड़िम" इस श्रेणी का पिन्ड बनाते हुए एक आचार्य का उदाहरण है कि द ८, आ ३, ड ७, इ ४, म ११, अ २;

इन सब वर्णों का योग ३५ है इसे प्रथमाक्षरके वर्ग त की संख्या ५ से गुणा करे तो पिन्ड १७५ हुआ।

दूसरा भट्ट कहता है कि दाडिम में वर्गांक ५।४।६ वर्णांक ३।३।५ जोडे तो २६ हुआ इनके आधार भूत स्वरों के अंक २।३।१ के जोड ६से गुणान किया तो पिन्ड १५६ हुआ। हरिभट्ट ने ८३२ यों कहा है कि वर्ग और वर्णांक मिलकर २६ हुए इनके स्वरों की संख्या ६ है ये सब मिलकर ३२ हुये। इनको परस्पर में गुणा लिया अर्थात २६ और ३२ को। एक और मत इस प्रकार भी है कि "दाडिम" के वर्गांक ५।४।६ वर्णांक ३।३।५ युक्त होकर ८।७।११ हुये अपने आधारभूत स्वरांक २।३।१ से गुणा किय तो १६ २१।११ हुए इन सब को जोड कर ४८ पिन्ड हुआ।

यद्यपि हरिभट्ट ने युक्ति से "दाडिम" का ८३२ पिन्ड जो दिखाया वह सचींचीन है परन्तु उसे दूना करने की युक्ति ग्रन्थ कर्ता का अभीष्ट होने से ही तो केरलभाष्य में दाडिम के पिन्ड का उदाहरण देकर पिन्ड १६६४ निश्चित किया है जिसे हम पहिले दिखा चुके हैं। देवता का नाम लेतेहुये किसीने गिरिश यह श्रेणी उच्चारण की तो वर्णांक ग के ५ र के ९ श के ९ ये सब मिलकर २३ हुये स्वरांक इ के ४ इ के ४ अ के २ इनका योग १० वर्णांकों में मिलाए तो ३३ हुए इन्हें वर्णांकों की संख्या २३ से गुणा किये तो ७५९ हुए अब दूना करने से पिन्ड १५१८ हुआ। गिरीश ऐसा कहने से ई दीर्घ होजाने पर मात्राङ्क ११ होंगे इन्हें वर्णांक में जोडे तो ३४ हुये अब इन्हें वर्णाङ्क संख्या २३ से गुणाकिया तो ७८२ हुआ और दूनां

करने पर १५६४ पिन्ड हुआ। यह पिन्ड रीति सब जगह समीचीन है परन्तु जहां हमने किसी पिन्ड के उदाहरण को नहीं दिखाया है वहां सब से पहिले लिखी हुई पिन्ड विधि से पिन्ड निर्माण कर प्रक्रिया करनी।

तीसरा प्रकरण।

मूक मुष्टि और लूका प्रश्न कहने में उत्तमोत्तम युक्तियां।
प्रथम त्रियोनिकज्ञान अर्थात् धातु मूल जीव की जांच॥

प्रच्छक की प्रश्न पूछते समय ऊपर को दृष्टि होतो मूक प्रश्न में जीव यदि नीचे को निगाह होतो मूल यदि समान दृष्टि होतो धातु प्रश्न है। पच्छक अपने बाहु या मुंह को छूरहा होतो जीव, पेट हृदय या कमर पर हाथ रक्खे हो तो धातु, इनसे नीचे के किसी अंग को स्पर्श कररहा हो तोमूल प्रश्न है।

पृच्छक ऐसी जगह आकर बैठे जहां अन्न सम्बन्धी कोई वस्तु रक्खी हो तो मूल प्रश्न, गीली वस्तु के समीप बैठने से जीव, और चमकीली या जली भुनीके पास बैठने से धातु। निऋति कोण में पृच्छक की निगाह हो तो धतु, अग्नि या वयु कोण में हो तो जीव, ईशान से मूल प्रश्न समझना।

पृच्छक पंडित से पूर्व पश्चिम या अग्नि कोण में बैठे तो धातु, उत्तर दक्षिण या ईशान कोण में बैठने से जीव, शेष में मूल। पूर्वोक्त दृष्टि आदि के परस्पर में मेल झोल से प्रश्न में भी मेल मिलाप कहना।

———

श्रेणी के अक्षरों से त्रियोनिक ज्ञान

अ आ इ ए ओ क ख ग घ च छ ज झ ट ठ ड ढ य श ह इन बीस अक्षरों में से कोई भी श्रेणी के आदि में हो तो जीव प्रश्न कहना चाहिये, उ ऊ अं त थ द ध प फ ब भ र ष इन १३ में से कोई भी प्रथमाक्षर हो तो धातु, ई ऐ औ ङ ञ ण न म व ल स ये ११ अक्षर मूल के हैं।

यह श्रेणी के प्रथमाक्षर का विधान मूक प्रश्न में जानना। मुष्टि प्रश्न में जो जीव के वर्ण हैं मूल सम्बन्धी और जो मूल के हैं वे धातु के, धातु के हैं वे जीव के जानने। तथा लूका प्रश्न में मूक में कहे हुए जीवाक्षरों की जगह धातु, धातु की मूल, और मूल की जगह जीव के अक्षर जानने।

"संधौ प्राप्तेतु देवेशि मिश्र चिन्तामुदेत्सदा" इस शिव वाक्यानुसार मात्रा और वर्ण के संयोग से योनि में भी संयुक्तता कहनी चाहिये, यथा अक्षर जीव का और मात्रा उसमें धातु की हो तो जीव धातु से मिश्रित प्रश्न कहना।

गर्गोक्त पिंडानुसार त्रियोनिक ज्ञान

पिंड को ३ का भाग दे शेष १ हो तो भूत काल, २ से वर्तमान, शून्य से भविष्यत् काल जानना, मध्यान्ह से पूर्व प्रश्न किया हो तो १ शेष से धातु, २ से मूल, और शून्य से जीव, मध्यान्होत्तर समय में प्रश्न हो तो १ शेष रहने पर मूल, २ से जीव, और शून्य से धातु। मुष्टि प्रश्नमें भी यहही क्रम उपयोगी है।

अन्य पिंडसे त्रियोनिक ज्ञान

त्रिगुणा वर्ण संख्यातु मात्रापिंडेन संयुता। त्रिभिश्चैवहरे-द्भागं शेषं योनि विनिर्दिशेत् ॥१॥ एक शेषे भवेज्जीवं द्वयोर्धातुर्न संशयः शून्ये मूलं विजानीयात् लूकायां जीव चांतिमे ॥ २ ॥ द्विशेषेण भवेन्मूलं धातुश्चैकावशेषके मुष्टयामपिवदे द्विद्वान् विमृष्य स्वमनीषया ॥ ३ ॥।

अर्थात् संयुक्तादि संज्ञाओं में जो प्रश्नहो उसीके अंकानुसार वर्णांक जोड़ तिगुने करले मात्राओं के अंकों का जोड़ जिसे मात्रा पिंड कहते हैं पूर्वोक्त तिगुना किए वर्ण पिंड में जोड़ दे भाग ३ का दे जो शेष १ हो तो जीव, २ हों तो धातु, और शून्य हो तो मूल। लूका प्रश्न में शेष १ हो तो धातु, २ से मूल और शून्य से जीव। मुष्टि प्रश्न में भी विद्वान् अपनी बुद्धि से सोच कर शेष १ से मूल, २ से धातु, और शून्य से जीव।

प्रश्न रत्न में बेला के अनुसार प्रश्न क्रम विशेष कहा है, इसमें पिंड को ३ का भाग दे लब्धि मिले उसे श्रेणी की संख्या से गुणा और २ का भाग दे शेष से फल कहना इस भांति कहा है कि यदि आलिंगित स्वर बेला में आलिंगत ही अन्त-र्बेला हो तो शेष १ से जीव, २ से मूल, शून्य से धातु।आलि-गित में अभिधूम हो तो १ से धातु, २ से मूल शून्य से जीव आलिंगित में दग्ध हो तो १ से धातु, २ से जीव, शून्य से मूल। अभिधूम में अभिधूम ही हो तो १ से जीव, २ से मूल शून्य से धातु, अभिधूम में दग्ध हो तो एकादिशेष से मूल, धातु जीव। दग्ध में आलिंगित हो तो १ से मूल, २ से धातु शून्य से जीव। दग्ध में अभिधूम हो तो धातु जीव मूल, दग्ध में दग्ध ही हो तो जीव मूल धातु जानना।

इस वेला विचार को " दिग्भिर्दिग्भिः नाड़िकाभिःक्रमेण ज्ञेया वेलालिंगितादि स्वराणाम्" आदि वाक्यों द्वारा इस प्रकार निर्माण किया है कि आलिंगितादि स्वरों की वेला दिन में क्रम से और रात्रि में व्युत्क्रम से दश दश घड़ी जानना; अर्थात प्रातः काल से १० घडी आलिंगित, इसके पीछे १० घड़ी अभिधूमित और इसके पीछे १० घड़ी दग्ध, रात्रि में पहिले १० घडी दग्ध पीछे अभिधूमित इससे पीछे १० घड़ी आलिंगित। इनमें ३ घडी २० पल प्रत्येक की अन्तर्वेला है। यथा आलिंगित वेला में ३घडी२०पल आलिंगित, पीछे अभिधूमित फिर दग्ध इसी भांति अभिधूमित में और दग्ध में भी जाननी अर्थात् १० घडी पीछे १३।२० तक अभिधूम में अभिधूम, १६ ४० तक अभिधूम में दग्ध और २० घडी तक अभिधूम में आलिंगित, २३ । २० तक दग्ध में दग्ध, २६ । ४० तक दग्ध में आलिंगित फिर दग्ध में अभिधूम।

मुष्टि प्रश्नमें विशेषता ।

श्रेणी की आदिम तीन मात्राओं पर ध्यान करे यदि उनमें दो आलिंगित और एक धूम्र होंतो मुट्ठी में सफेद वस्तु, २ धूम्र १ दग्ध हों तो पीली;२ दग्ध एक आलिंगितहोतो उन्नाबी, दग्ध आलिंगित धूम्र इस क्रम से हों तो स्वच्छ स्वेत, आलिंगित दग्ध धूम्र हों तो काली, दग्ध अभिधूम्र आलिंगित होंतो हरी, २ आलिंगित १ दग्ध होंतो चित्र विचित्र, तीनों आलिंगित ही होंतो सींग सरीखी, तीनों धूम्र होंतो सुनहरी और तीनों दग्ध होने से नीली कहनी ।

पूर्वोक्तत्रियोनिज्ञान से जीव प्रश्न निश्चित होने पर जीव भेद ।

चूड़ामणि में यद्यपि "जीवचिन्ता यदा दृष्टा भागं पञ्च-भिराहरेत्" कहकर जीव के पांच भेद माने हैं, परन्तु वे सदा निर्मूल हैं; क्योंकि एक पांव का जीव चाहे कोई कल्पना किया करे दृष्टि गोचर नहीं होता इसी से केरलागम के अनुसार "चतुस्तष्टे विजानीयात् द्विपदस्तूर्य पादकाः अपदा बहु पदाश्चैव भेदाः जीव योनिषु" अर्थात् पिन्ड को चार का भागदे शेष १ से द्विपद, दो से चतुष्पद, ३ से अपद, शून्य से बहु पाद ।

यह ही गर्ग का सिद्धान्त है कि "द्विपद स्तूर्य पादश्च विपदः पाद संकुलाः चतुर्भिर्भाजिते शेषे विज्ञेयः सर्वदा बुधैः" अर्थात् पिन्ड को चार का भाग दे शेष से पूर्ववत् संज्ञा जाने ।

इस में विशेषता इतनी ही है कि लब्धियुक्त पिंड ही पिंड समझता जाय जैसे कि चंपा इस श्रेणी में पिंड २०० भाग तीन का देने से लब्धि ६६ शेष २ से वर्तमान काल का प्रश्न है ।

लब्धि मूल पिंडमें जोडने से २६६ भाग ३ का दिया ८८ शेष२ पश्चात्होत्तर प्रश्न किया गया इसीसे जीव संज्ञक है; लब्धि ८८ में पिंड २६६ जोड़े ३५४ हुए इसमें भाग ४ का दिया लब्धि ८८ शेष २ से चतुष्पद जीवका प्रश्न हुआ ।

अन्य पिंड में उत्तरमात्रा प्रथप होनेसे १ और जोड़दे अधर होनेसे १ घटादे । दग्ध मात्रा होतो पिंडको दो जगह रक्खे एक जगह भाग ३ कादे दूसरी जगह रक्खे हुए में लब्धि जोड़ भाग ४ कादे शेष पूर्ववत योनी अर्थात् १ शेष रहनेसे द्विपद, २ से चतुष्पद, ३ से अपद और शून्यसे बहुपाद ।

यथा नारिकेल इस श्रेणी में अनभिघात संज्ञक प्रश्न होने से न १०, र ९, क ३, ल १०, जोडने से वर्ण पिंड ३२; आ २, इ ३ ए २, अ १ जोड़ मात्रा पिंड ८, वर्ण पिंड तथा मात्रा पिंड जोड़नेसे ४० हुए इसे १७ गुणा किया ६८०, प्रथम मात्रा अभिधूम होने से १ घटाया ६७९ स्पष्ट पिंड है। इसमें श्रेणी में प्रथम मात्रा अधर होने से १ घटाया ६७८ भाग ४ का दिया शेष २ से चतुष्पद योनि हुई।

चन्द्रोन्मीलनमें सरल युक्ति यह भी कही है कि संयुक्त संज्ञक प्रश्नमें विशेष करके द्विपद योनि; असंयुक्त में चौपगी, अभिघात अनभिघात में पादहीन सर्पादि और अभिहित अनभिहित में वहुपाद कनखजूरा विच्छू आदि इसीभांति आलिंगित में द्विपद अभिधूम में चतुष्पद दग्ध में तिर्यङ् योनि।

द्विपद के भेद चूड़ामणि से।

द्विपदे चैव दृष्टेतु चतुर्भिर्भागमाहरेत् देवाश्चाथमनुष्याश्च पक्षिणस्तारकाः क्रमात्। मात्रा पिंडको दूनाकर पहिले वर्ण के अंकसे गुणा करले ४ का भाग दे शेष १ होतो देवयोनि २ से मनुष्य ३ से पक्षीऔरशून्य से राक्षस; अथवाप्रश्नं शुद्धमाक्षरै र्ग्राह्यं सप्तयुक्तं नवाहतं युग संख्या हरेद्भागं शेषं चैव फलम्बदेत्। इस चन्द्रोन्मीलन के वाक्यानुसार संज्ञा के वर्णांकों द्वारा पिंड बनाले उसमें ७ जोड़ ९ से गुणा करे ४ का भागदे शेष से पहिली भांति देवादि योनि जाने।

साधारण रीति यह भी है कि यदि इ ए ओ मात्रा श्रेणी के आदि में स्वतंत्र या किसी वर्ण में मिलकर विद्यमान होतो देव

योनि, अ आ अः होंतोमनुष्य, ई ऐ औ होंतो पक्षी उ ऊ अं हों तो राक्षस। अथवा उत्तरोत्तर वर्ण श्रेणी के आदि में होतो देव, उत्तर होतो मनुष्य, अधराधर होंतो पक्षी, और अधर होंतों राक्षस चूड़ामणिमें देवयोनि के भेद इस प्रकार कहे हैं कि श्रेणीके अक्षरों की संख्या तिगुनी कर द्विगुणा किए हुए वर्ण पिंड में जोड़ मात्रापिंड और मिलादे भाग ४ कादे १ शेष रहे तो कायस्थ ब्रह्म आदि, २ शेष होंतो भुवनस्थ इन्द्रादि, ३ से ज्योतिष सूर्यादि; शून्य से पितर बडबानलादि; अथवा श्रेणीके आदिमें अ, इ, ए, ओ, मात्रा होंतो स्वर्गका देव इन्द्रादि; आ, ई, ऐ, औ; होंतो पृथ्वीका सन्त महन्त याभंय्या भूमियां; उ, ऊ, अं, अः; होंतो पातालका पद्मनागादि।

प्राचीन पिंड की प्रक्रिया तो सूधी यह है कि पूर्व प्राप्त पिंड में लब्धि जोड संख्या का भाग दे शेषसे योनिजान फिर लब्धि जोड दूसरी संज्ञा निकालले ईसी प्रक्रिया से जहांतक फल लेना हो लेले। यथा कल्पित पिंड १६६५ को भाग ४ का दिया शेष १ से द्विपद योनि लब्धि ४१६ को पिन्डमें जोड २०८१ इसमें ४ के गाग दे शेष १ से देव योनि, लब्धि ५२० पिंड २०८१ में जोडनेसे २६०१ भाग ४ का दिया शेष १ से कायस्थ अर्थात् कोई इंद्रियाधिष्ठाता देवता।

मनुष्य भेद में "चतुर्भिर्भक्ते विजानीया द्वर्णां वै ब्राह्मणादयः" कहकर केरलागम में चार वर्ण वताए है; एवम् चूड़ामणि में मनुष्य के ही नहीं वरन सम्पूर्ण द्विपदो के चार भेद इस भांति कहे है।

ब्राह्मणः क्षत्रियः वैश्यःशूद्रजाति रितिक्रमात्। जलगाः स्थलगा श्चैव खचरा सर्वथा इति॥ १ ॥ ब्रह्म देवस्तथा सिद्धः रक्षाश्चाब्धि

विभाजिते । यह चार का भाग क्रिया पूर्वक गर्गके मतसे बने हुए पिंड पर है,परन्तु आधुनिकों के मतमें मनुष्य के पांच भेद हैं जिन्हे चन्द्रोन्मीलन में वर्गक्रम पर बांट दिया है अर्थात् वर्गका प्रथमाक्षर श्रेणी के आदिमें होतो ब्राह्मण दूसरा होतो क्षत्रिय तीसरा होतो वैश्य चौथा होतो शूद्र और पांचमा होतो अन्त्यज सम्बन्धी प्रश्न कहना । अथवा वर्ण पिंड को तिगुना और मात्रापिन्ड को दूना कर दोनों को जोड़कर ५ का भागदे और एकादि शेषसे ब्राह्मणादि योनि जाने । तथा श्रेणी के आदिमें अ इ ए ओ इन मात्राओं मेंसे कोई भी होतो ब्राह्मण आ ऐ होतो क्षत्रिय ई औ होतो वैश्य उ ऊ होतो शूद्र अं अः होतो अन्त्यज जानना । उत्तर वर्ण पहिले होतो जीवित, अधर से रोगी या मृतक समझना । मात्रा अ इ ए ओ से पुरुष आ ई ऐ औ से स्त्री उ ऊ अं अः से नपुंसक जानना ।

श्रेणी के आदि में र ल व ट ठ ड होतो चूंधा ङ ञ ण न म होतो अन्धा इ ई ख म ष स होतो गूंगा क ख ग घ अआ से गंजा ज श उ ऊ अं अः से कुबड़ा श ष स ह से बहिरा कहना अथवा पूर्वोक्त दोषोंका आविर्भाव मनुष्य में जानना ।

ब्राह्मणेपि चतुर्भागं क्रमेणाागमकं वदेत् । ब्रह्मचारी गृहस्थश्च वाणप्रस्थो यतिस्तथा ॥ १ ॥ चतुर्धायतयः प्रोक्ताश्चतुर्भिर्भागमाहरेत् । हंसाः परमहंसाश्च बहूदक कुटीचराः ॥ २ ॥ पिंड को ४ का भाग देनेसे ये सब भेद भी ज्ञात होते हैं ।

गौरः श्यामस्तथा रक्तो दीर्घो मध्यश्च खर्बकः शिशुर्युवा तथा वृद्ध स्त्रिभिर्भक्ते भिजायते ॥ १ ॥ गर्ग मनोरमा के इस वाक्या-

नुसार जो पिंड पूर्वोक्त "वर्ग वर्ण प्रमाणं" इसरीति से दिखाआए हैं उसे तीन का भागदे एकादि शेषसे गौरश्याम और रक्त जाने तथा लब्धि को पिन्ड में जोड भाग ३ का दे शेष से लंबा ठिंगना और वामन जाने फिर लब्धि को पहिली लब्धियुक्त पिन्ड में जोड भाग ३ का दे शेष से बालक जवान और बूढा जाने। इसीको केरल में जोर से कहा है।

बालं युवनं वृद्धञ्च गौरं श्यामञ्च रक्तकम्। दीर्घं मध्यं वामनं च त्रिभिर्भक्तेक्रमा द्विदेत्। १। ये भेद देवादिकोंमेंभी लब्ध होते हैं।

द्वाभ्यां भक्ते विजानीया न्नरनार्य्यौ यथा क्रमात् इस वाक्य से गर्ग पिंड को दोका भाग देने से १ शेष होतो नर, शून्य होतो स्त्री, भक्ते द्वादशभि श्चैवः भाव सम्वंध चिन्तनम्। इसके अनुसार गर्ग पिंड को १२ का भाग देने से १ शेष होतो अपने शरीर के सुख दुःखादि की चिन्ता, २ शेष होंतो धन या कुटुम्ब की चिन्ता, ३ से भाई नौकर चाकर की चिन्ता, ४ से मकान जायदाद मित्र या सवारी की चिन्ता, ५ से सन्तान या इम्तहान में पास होने की चिन्ता, ६ सेदुश्मन से मुक़दमे की या रोगादिक की, ७ से स्त्री की ८ से मरने की ९ भाग्योदय १०से शुभादि कर्म्म राज या ब्यापार की चिन्ता, ११ से लाभ और शून्य से कर्ज कैद या खर्चे की चिन्ता कहनी।

अन्य व्यक्ति भवो भेदो नास्माभिस्तु प्रकथ्यते। गन्थ बाहुल्यभीत्या च ज्ञेयमन्यत्रतःसदा। १।

प्रश्न श्रेणी में प्रथम उत्तरमात्रा होतो जलज अर्थात् हंस बत्तख मुरगा आदि, अधर होतो स्थलज अर्थात तीतर कबूतर बटेर आदि, दग्ध होंतो शिकारी बाज गीध आदि जानों

पिन्ड को बारह गुणा कर ३६ घटा दे और ७ का भाग देवे। शेष विषम अंक १।३।० बचे तो खुला हुआ सम बचे तो पिंजरे आदि में बन्धा हुआ जाने।

राक्षस भेद में पिन्ड को २ का भाग दे शेष १ होतो कर्म्मज भूत प्रेत पिशाच शून्य से योनिज रावणादि सरीखा।

चतुष्पद भेद चूड़ामणि:—खुरी नखी तथा दन्ती शृंगिणो वेद भाजिते द्वाभ्यां खुरिणि संदृष्टे ग्राम्यारण्यश्च भागतः ॥ १ नखिनस्तु यदा दृष्टा द्वाभ्यां ग्राम्य वनं भवेत्। दन्तिष्वेवं शृंगिणिच द्वाभ्यां स्थलजलं वदेत् ॥ २ ॥ कृमिजः काष्ठंजः कीटः त्रिभिः शेषे क्रमाद्वदेत्।

चौपाये के भेद जानने को गर्ग सम्मत पिंड में ४ का भाग दे शेष १ हो तो खुरी अर्थात् घोड़ा ऊँट गधा आदि, २ से नखी सिंहादि कुत्ते बिल्ली लोमड़ी गीदड़ तक,

३ शेष होतो दन्ती अर्थात् हाथी शूकर गेंडा आदि, शून्य से शृंगी गाय भेंस आदि यदि खुरी प्रतीत होतो २ काभागदे १शेष से ग्राम वासी और शून्य से जंगली जाने।

इसी प्रकार नखी में भी ग्राम-वासी या बन-बासी दन्ती और शृंगी में स्थल और जल के प्रभाव से भेद कहने तथा पिंड को तीन के भाग से कृमिज काष्ठज और कीट जाने। जैसे चंपा इस श्रेणी का पिंड २००हैइस श्रेणी का जीव भेदमेंचतुष्पाद ज्ञात होने पर चार का भाग दिया शेष शून्य से शृंगी; लब्धि ५० को पिन्ड में जोड़े तो २५० हुए, अब इस में दो का भाग दिया तो शेष शून्य रहने से जल में रहने वाला शृंगी बेल मकर आदि पिंड २०० को तीन का भाग देने से शेष दो में काष्ठज अर्थात् पर्वत के समीप रहने वाला।

इसी भांति श्रेणी के आदि में अ आ इ मात्राओंमें सेकोईहो तो खुरी ई उ ऊ होतो नखी ए ऐ ओ से दन्ती और अं अः से शृंगी तथा अ व या क वर्ग से खुरी,च वर्ग या ट वर्ग से नखी त वर्ग या प वर्ग से दन्ती य वर्ग या श वर्ग के श्रेणी में प्रथम होने से शृंगी कहना चाहिये ।

अपद के भेद में वर्ग का पहिला तीसरा वर्ण श्रेणी के आदि में होतो जलचर दूसरा चौथा होतो स्थलचर पांचवां होतो जल और स्थल में विचरने वाला प्रथम दीर्घ मात्रा होतो विषैला और ह्रस्व होंतो निर्विष ।

बहुपद में इ ए ऐ ओ ऊ इन में से कोई सा भी श्रेणी के आदि में होतो अन्डज अर्थात कीडी आदि और शेष से जरायुज सर्पादिक जाने ।

अथधातुभेदाः ।

आलिंगित स्वर श्रेणी के आदि में होतो पिंड में ३ जोडे अभिधूमित होतो ४ दग्ध होतो २ इनके जोड़ने से यदि पिंड संख्या बिषम होजावे तो धांम्य अर्थात् पकी हुई और सम होतो अधाम्य (कच्ची) जाननी । यथा नारिकेल,, श्रेणी का पिंड ४० है और अभिधूम मात्रा प्रथम है इससे ४ जोडे तो४४ समाङ्क संख्या हुई अतएव अधाम्य धातु सम्बन्धी प्रश्न है ।

अब साधारण रीति से धातु के भेद जानने में यह सरल रीति है कि यदि श्रेणी के आदि में अ वर्ग हो तो सोना क वर्ग हो तो चांदी, च वर्ग से तांबा, ट वर्ग से कांसी, त वर्ग से रांग, प वर्ग से जस्त, य वर्ग से पीतल, श वर्ग से लोहा जानने, कांसी में जर्मन सिलवर और लोहे में अलमोनियम धातु भी जाननी ।

तथा वर्णांक को श्रेणी से गुणाकर मात्रांक जोड़ ८का भाग देवे और शेष से सुवर्णादि धातु जाने। जैसे नारिकेल,, इस श्रेणी में वर्णांक ३२ को श्रेणी ४ से गुणा किया तो १२८ हुए, मात्रा पिंड ८ कावर्ग ६४ जोडे तो १९२ हुए और भाग ८ का दिया तो शेष शून्य रहा इसी से लोहा कहना।

उत्तर काल में प्रश्न होतो मात्रा के अंकों को श्रेणी से गुणाकर दो जगह स्थापन करे, एक जगह १५ का भाग दे लब्धि दूसरी जगह रक्खे हुये में जोड़ दे वर्ण पिंड जोड ७ का भाग दे सम बचे तो घटित, विषम होंतो अघटित जाने। अधर काल में मात्रा पिंड को दूना करे और वर्ण पिंड को श्रेणी से गुणा कर दोनों को जोड़ले ७ का भाग देवे सम बचे तो अघटित और विषम से घटित जानना चाहिये।

घटित के तीन भेद हैं वे इस प्रकार जाने जाते हैं। यदि श्रेणी के आदि में आलिंगित मात्रा होतो गहने, अभिधूमित हो तो बरतन, दग्ध होतो रुपये पैसे।

गहनों के भेदों में यदि मात्रा अ आ प्रथम होंतो शिरका गहना, इ ई होंतो कान का, उ ऊ से हाथ का, ए ऐ से कंठ का, ओ औ से कमर तथा अं अः से पांव का गहना बताना, तथा वर्णांक को ३से गुणाकर मात्राङ्क जोड़ देवे और ५ जोड ६ का भाग देना शेष १ से शिर २ से कान ३ से हाथ ४ से कंठ ५ से कटि और शून्य से पांव का गहना बतावे, जैसे "नारिकेल" इस प्रश्न-श्रेणी में वर्णांक ३२ को तिगुणा किया तो ९६ हुये मात्रांक ८ जोडे तो १०४ हुये इनमें ५ और जोड़ने से १०९ हुये अब इस में ६ का भाग देने से शेष १ एक रहने के कारण

शिर का गहना कहे यदि शिर के सिवाय और किसी अंग का गहना प्रतीत होतो छै के भाग से जो लब्धि मिले उसमें मात्रा पिंड तथा श्रेणी की संख्या को घटाने से शेष विषमाङ्क रहे तो दाहिने अंग का, समाङ्क होतो बांई तरफ का। यदि मात्रा पिंड और श्रेणी को लब्धि में न घटा सके तो उन्हें जोडदे और सम विषम अङ्कानुसार फल कहे।

अथ मृय धातु के प्रतीत होने पर श्रेणी में आलिंगित मात्रा प्रथम हो तो उत्तम हीरा पन्ना आदि जवाहरात, अभिधूमित होतो मध्यम उपधातु मैंनसिल हरताल अभ्रक आदि, दग्ध हो तो गेरू लवण रामरज मिट्टी खरिया आदि निकृष्ट कोटि। गर्गमनोरमा में धाम्य धातु के भेद विशेष रूप से इस भांति कहे हैं।

घातो र्भेदान्प्रवक्ष्येत्र पिंडस्यदश शेषतः।
स्वर्णंरौप्यं तथा ताम्रं माणुकं कांस्य पित्तले ॥ १ ॥
सीसं जसद लोहंच तालाभ्रकमथापिवा।
ताम्रं भिन्नपदं केचित्तुद्वादशभागेन हीरकम् ॥ २ ॥

पिंडको दशका भागदे एक बचे तो सोना,२ से चांदी, ३ से तांबा, ४ से गिलट, ५ से कांसी, ६ से पीतल, ७ से सीसा, ८ से जसद, ९ से लोहा, और शून्य से रांग; किसी का ऐसा भी मत है कि पिंड को १० की जगह १२ का भाग दे और शून्य के स्थान १० शेष रहने से रांग, ११ से सफेद तांबा, और शून्य से हीरा। भूषणादिक जानने की प्रक्रिया पहिले लिख ही चुके हैं परन्तु विशेष बात जाननी हो तो पिंड को ६ का भाग देकर एकादि शेष से अंग जान ले जैसा कि वर्णागम में कहा है।

यद्वा त्वाभरणं दृष्टं षड्भिर्भाग माहरेत् ।
शिरः कर्ण-कर-ग्रीवा-कटि-पादाः क्रमेणच ॥ १ ॥

इससे जो तात्पर्य्य सिद्ध होता है वह हम पहिले लिख चुके हैं। अधाम्य के भी मनोरमा में १० ही भेद कहे हैं जैसा कि केरलचूड़ामणिसार में लिखा है।

मृत्तिकांजन पाषाणं हरितालंमनःशिला। शर्करा मर्कत वज्र पद्मरागं प्रवालकम् ॥१॥ मौक्तिकञ्चेति विज्ञेया दश केरलविद्बुधैः।

—:०:—

मूल के भेद

मनोरमा—मूलभेदा न्प्रवक्ष्यामि यथोक्तं शम्भुना पुरा ।
मूलं काष्ठं त्वचापत्र पुष्पञ्चैव तथा फलम् ॥ १ ॥
श्वेतं रक्तं तथा पीतं कृष्णं चित्रं हरीतकम् ।
षड्भिर्भक्ते विजानीयात् प्रश्नविद्या-विचक्षणैः ॥ २ ॥
तरवश्च लतौषध्यस्तृणं गुल्मादिकं तथा ।
शुष्कार्द्रन्तथा द्वाभ्यां भक्ष्याभक्ष्यं तथैवच ॥ ३ ॥

इसके अनुसार पिंड को ६ का भाग दे और एकादि शेष से फल कहे १ मूल, २ काष्ठ, ३ छाल, ४ पत्ता, ५ पुष्प और शून्य से फल; तथा लब्धि को पिंड में जोड़६ का भाग देकर१ से सफेद, २ से लाल, ३ से पीला, ४ से काला, ५ से चितकबरा और शून्य से हरारंग समझे। यदि जड़ आदि में रंग की सम्भावना–बुद्धि संगत न हो तो इस कल्पना को छोड़ दे। नारद के कथन "मधुकं कटुकं तिक्तं कषायंचरसाः क्रमात्" के अनुसार रसों की कल्पना करे।

काष्ट प्रतीत होतो पिंड में ५ का भाग दे, १ शेष होतो तरु या वृक्ष, २ से बेल, ३ से औषधी, ४ से घास फूस और शून्य से झाड़ी चमेली मालती या पाला आदि समझना चाहिये। इस ५ के भाग से प्राप्त हुई लब्धि को पिंड में जोड २ का भाग दे १ शेष होतो सूखी और शून्य से गीलो। इस लब्धि को पहिले भाज्याङ्क में जोड दो का भाग दे १ शेष होतो खाने योग्य और शून्य से अभक्ष्य समझे।

चूड़ामणिः—भक्ष्याणि षट्प्रकाराणि भागस्ताबद्धिरेवहि
तिक्तं कटु कषायंच मधुरंक्षारमम्लकं ॥१॥

सगन्धंगन्धहीनंच कृपाद्ज्ञेयंद्विभागतः ।
भक्ष्यं पुनर्द्विधा मिश्रं द्वाभ्यां भागेसमाहरेत् ॥२॥

एकेन शोभनाहारं शून्ये चैव विदूषितम् ।
खाद्य पेयं तथा लेह्यं चोष्यंच बेद भाजिते ॥३॥

भक्ष्य प्रतीत होनेपर ६ का भाग दे एकादि शेषसे तिक्तादि छै रस जाने, लब्धि को भाज्याङ्क में जोडकर २ का भाग दे एक शेषसे सुगंधियुक्त और शून्यसे दुर्गंधियुक्त, लब्धि को भाज्याङ्क में जोड भाग २का दे शेष१ से खाने में उत्तम, शून्य से दूषित, लब्धि को भाज्याङ्क में जोड भाग ४ का दे १ शेषसे खाने योग्य, २ से पीने योग्य, ३ से चाटने योग्य, और शून्यसे चूपने योग्य समझना चाहिये।

उदाहरणमें गर्गमतसे " चंपा " इस श्रेणीका पिंड २००है इसे ५ का भाग दिया शेष शून्य से झाड़ी। लब्धि को (४०को) पिंड में जोड़ा तो २४० हुए; भाग २ का दिया शेष शून्य होनेसे

गीली । लब्धि को (१२० को) भाज्याङ्क २४० में जोडे तो ३६० हुए भाग २ का दिया शेष शून्यसे अभक्ष्य समझना ।

भक्ष्य प्रतीत होतातो लब्धि १८० को ३६० में जोडकर ६ का भाग दे और एकादि शेष से तिक्तादि छैः रस जानते । इसी भांति लब्धि को भाज्याङ्क में जोडते हुए सम्पूर्ण भेदों की कल्पना करलेनी । विशेष यह है कि श्रेणीके आदिमें उत्तर वर्ण या मात्रा होनेसे चिकना, अधर या दुग्ध होनेसे रूखा बतावे ।

मुष्टिप्रश्नादि में वस्तुके रूपका ज्ञान इस भांति है कि श्रेणीका पहिला अक्षर अवर्गीय होतो गोल, कवर्गीय हो तो लंबी, चवर्गीय से तिकोनी, टवर्गीय से खंड खंड, तवर्गीय होने से चाक सी, पवर्गीय होने से सांप की भांति सुकड़ने या लिपटने वाली, यवर्गीय से चौकोनी और शवर्ग से बहुत कोने वाली । वर्ण और मात्रा से भिन्न२ आकार प्रतीत हो तो मिश्रित फल जानना ।

मूकादि–प्रकरणोयं हिन्दी वाण्या स्फुटी कृतः ।
धीमता चुन्निलालेन दैवज्ञानां हितेच्छया ॥ १ ॥

४ प्रकरण ।

नाम निकालने की विधि ।

इसके लिए जो पिंड बनाया जाय उसके मात्राङ्क और वर्णाङ्क इस प्रकार हैं । अ १ आ २ इ ३ ई ४ उ ५ ऊ ७ ए २ ऐ ४ ओ ६ औ ६ अं ३ अः ५; क ५ ख ६ ग ७ घ ८ ङ ९; च ६ छ ७ ज ८ झ ९ ञ १०; ट ७ ठ ८ ड ९ ढ १० ण ११; त ८ थ ९ द १० ध ११ न १२; प ९ फ १० ब ११

भ १२ म १३; य १० र ११ ल १२ व १३, श ११ ष १२ स १३ ह १४।

श्रेणी में जितने वर्ण उत्तर संज्ञक हैं उनकी जुदी राशि बनानी तथा अधर वर्णों की दूसरी, उत्तर वर्ण आदि में होने से तो उत्तर राशि के अंक में अधरांक घटा देने, पहिले अधर वर्ण हों तो दोनों राशियों को जोड़ देना चाहिये, यदि उत्तर वर्ण पहिले हो और अधरों की राशि उत्तर राशि में न घट सके तो जोड़ देनी, स्वराङ्कों से गुणाकर भाग ७ का देना शेष बचें उतने ही नाम में अक्षर जानने। जैसे "नारिकेल" इस श्रेणी में वर्ण पिंड ४० है, उत्तरों की संख्या २९ और अधराक्षर केवल "र" है जिसकी संख्या ११ को प्रथम उत्तर वर्ण होने के कारण २९ में घटाए तो शेष १८ रहे इसको मात्रा पिंड ८ से गुणन किया तो १४४ हुए भाग ७ का दिया शेष ४ बचे। इससे ज्ञात हुआ कि ४ अक्षरों का नाम है। दूसरी युक्ति यह भी है कि श्रेणी में उत्तर वर्ण अधिक हों तो सम २।४।६।८ अक्षरों का नाम, अधर वर्ण अधिक हों तो विषम ३।५।७ अक्षरों का नाम जानना चाहिये।

अक्षर निकालने के लिये संयुक्तादिसंज्ञाओं में से जिस संज्ञा का प्रश्नहो उसी रीति के अनुसार पिंड बनाले यदि संयुक्त संज्ञा का प्रश्न हो तो २ से, असंयुक्त में ३ से,अभिहित में चार से,अनभिहित में ५, से अभिघात और अनभिघातमें ६ से आलिंगित में ७ से, अभिधूमित में ८ और दग्ध में ९ से गुणा कर भाग ८का देने से जो शेष हो वह पहिले अक्षर की वर्ग संख्या है, लब्धि को भाज्य में जोड़ भाग ५ का दे, शेष संख्या तुल्य वर्ग में अक्षर हैं,

यदि "य श" वर्ग प्रतीत होंतो उनमें ४ का भाग दे शेष तुल्य अक्षर जाने फिर लब्धि को भाज्य में जोड़ ८ का भाग दे शेष बचे वह दूसरे अक्षर का वर्ग जाने, लब्धि को भाज्य में जोड़ भाग ५ का दे शेष तुल्य दूसरा वर्ण, इसी प्रकार जितने अक्षर नाम में पहिले कहे हुए के अनुसार ज्ञात हुए हैं उतने निकालले।

मात्रा निकालने के लिए पिंड को पहिले अक्षर के वर्ग की संख्या से गुणा भाग १२ का दे शेष संख्या तुल्य पहिले अक्षर की मात्रा होगी, लब्धि को भाज्य में जोड़ १२ का भाग देने से शेष तुल्य दूसरे वर्ण की मात्रा होगी, इसी प्रकार भाज्य में लब्धि जोड़ते हुए तथा शेष को मात्रा जानकर जितने नामाक्षर हैं उतने अक्षरों की मात्रा निकालले परन्तु मात्रा निकालते समय विसर्ग आजाय तो वहां तक ही नाम समझे आगे प्रक्रिया न करे।

प्रश्नरत्ने—द्वित्र्यादिष्वेव वर्णेषु बिसर्गो यदि दृश्यते।
तदा तदन्तं नामः स्यादिति शम्भुमतं स्मृतम् ॥१॥
ऐसा ही सब आचार्यों का मत है।

केरलचन्द्रे—पिण्डेतु सप्तभिर्भक्ते नाम वर्णस्य संख्यकाः।
पिण्डाष्ट भक्तवर्गास्स्युः संख्याप्ते वर्णकाःक्रमात् ॥१॥
लब्धं मूले विनिक्षिप्य यावन्नामार्ण संख्यकाः।
एतन्नामार्णकं ज्ञानं न देयं यस्य कस्यचित् ॥२॥

उदाहरण—मुष्टि प्रश्न में पिंड १६६४ को तीन का भाग देने से शेष दो बचे, औत्तरीबेलामें अर्थात् दिन के पूर्वार्द्ध में प्रश्न है इसलिये "धातु मूलं तथा जीवं जीवं मूलं-

यथानुक्रम्" इस वाक्यानुसार मूल सम्बंधी प्रश्न प्रतीत हुआ। मूल प्रतीत होने पर उसके भेदजानने केलिए पिंड १६६४ को भाग ६ का दिया शेष २ होनेसे काष्ठ प्रतीत हुआ अब इस काष्ठ का नाम निकालने को पिंड १६६४ में ७ का भाग दिया शेष ५ रहे इस लिये पांच अक्षर का नाम है; यहां ७ के भाग देनेसे लब्धि२३७ थी इसे मूलपिंड १६६४ में जोडने से १९०१ हुआ इसे भाग ८ का दिया तो शेष ५ रहे अतः ज्ञात हुआ कि आठ वर्गों मेसे वस्तुका नाम पांचवे वर्ग अर्थात् तवर्ग में है अब २३७ लब्धिको मूलपिंड १६६४ में जोडनेसे १९०१ पिंड हुआ इसमें वर्ण निकालने के लिये ५ का भाग दिया शेष १ से वर्गका पहिला अक्षर "त" ही वस्तु के नाम का आदिम अक्षर है।

दूसरा वर्ण निकालने के लिये लब्धि २३७ को दुगुनाकर ४७४ को मूलपिंड १६६४ मे जोड़ा तो २१३८ हुये इनमें आठ का भाग देनेसे शेष २ रहे इससे जाना कि नामके द्वितीयाक्षर का वर्ग " क " है, लब्धि २६७ है इसलिये दूसरा वर्ण जानने के लिए इसे पहिले वर्ण के निकालते समय जो पिंड कल्पना १९०१ की थी उसी में जोड़ा तो २१६८ हुए भाग ५ का दिया तो शेष ३ रहे, ज्ञात हुआ कि वस्तु के नाममें दूसरा अक्षर कवर्ग का तीसरा "ग" है। तीसरा अक्षर निकालने के लिये लब्धि २३७ का तिगुणा किया तो ७११ हुये पिंड १६६४ में जोडा तो २३७५ हुये भाग ८ का दिया शेष ७ से जानाकि सातवां वर्ग (य वर्ग) तीसरे अक्षर का है। लब्धि २९६ में पूर्वरीत्यनुसार कल्पित पिंड १९०१ को जोडा तो २१९७ हुये इन्हें ५ का भाग देने से शेष दो हुये अतः य वर्ग का दूसरा अक्षर "र" वस्तु के नाम में तीसरा वर्ण है इस भांति केरला

गब के उदाहरणानुसार मुष्टिगत वस्तु का नाम तगर काष्ट है। य वर्ग और श वर्ग में चार के भाग की विधि दूसरे उदाहरणों में जाननी जोकि प्रश्नरत्न चन्द्रोन्मीलनादि कों के पिंडों पर प्रक्रिया करने में सर्वथा माननीय और समीचीन है। हमने पहिले उनके मतानुसार ही लिखदिया था जिसे अब कुछ और विषेष कहकर दिखायेंगे।

यावत् संख्याभिधूमाः स्युस्तावत्संयोगमुच्यते ।
नामाक्षरेण विभजेच्छेषं संयोग संख्यकम् ॥ २ ॥
पुनः पुन स्तथा कार्यं यावन्नाम स्फुटो भवेत् ।

कुछ विशेष और भी कहते हैं—

द्व्यर्काः पंचेषु चंद्राः गजरस शशिनो द्वीन्दु हक् सिद्धपक्षाः । पंचेभाक्षीणि शून्य द्विरदकरमिता श्चन्द्रवेदाग्नितुल्या ॥ वर्णांका श्चाथ धृत्या हिमकरगुणै द्व्यग्निभि र्देवाताभिर्द्विशक्रैस्तत्व तुल्यै द्विरदकरमितै र्भूगुणै र्वृद्धितोर्णाः ॥ १ ॥ पिंडे चेन्नीचवेलाखदहनगुणितं गोद्रियुक्तं गजाप्तं प्राग्वद्वर्गाः यदाद्या खरसगुणितं अंकयुक्तं गजाप्तं ॥ वर्गाल्लब्ध्याढ्यपिंडं इषुभिपरिहृतं तत्र वर्णौ यशौ चेद्वेदाप्तंमात्रिकाढ्यनिखिलमपि बुधैः प्राग्वदत्रापि शोध्यम् ॥ २ ॥

अ १२२ क १५५ च १६८ ट २१७ त २२४ प २८५ य २८० श ३४१ वर्गांक है, इनसे वर्णांक आ १४० इ १५८ ई १७६ उ १९४ ऊ २१२ ए २३० ऐ २४८ ओ २६६ औ २८४ अं ३०२ अः ३२० प्रत्येक में १८ की वृद्धि से हुए हैं, तथा ख १८६ ग २१७ घ २४८ ङ २७९ प्रत्येक ३१ की वृद्धि से, तथा छ २०० ज २३२ झ २६४ ञ २९६ प्रत्येक

३२ की बढोतरी से, तथा ठ २५० ड २८३ ढ ३१६ ण ३४६ प्रत्येक ३३ की बढोतरी से, थ २५२ द २८० ध ३०८ न३३६ प्रत्येक २८ की वृद्धि से, तथा फ ३१० ब ३३५ भ ३६० म ३८५ प्रत्येक २५ की वृद्धि से, तथा र ३०८ ल ३३६ व ३६४ प्रत्येक २८ की वृद्धि से, ष ३७२ स ४०३ ह ४३४ प्रत्येक ३१ बढाने से प्राप्त हुये हैं। इनके अनुसार श्रेणी का पिंड बनालेवे यदि अधरबेला होतो ३० गुणाकर ७६ जोड़े, उत्तरवेला होतो ६० गुणाकर ६ जोड भाग ८ का दे शेष तुल्य वर्ग पहिले अक्षर का जाने, लब्धि को स्फुट पिंड में जोड भाग ५ का दे शेषसंख्यातुल्य वर्ग में अक्षर जाने, फिर लब्धि जोड ८ का भाग दे शेष तुल्य दूसरे वर्णका बर्ग जानले, लब्धि को पिंड में जोड़ पांचके भाग से जो शेष रहे उसके तुल्य वर्ण जानले। इसी भांति लब्धि जोड़ता हुआ ८ के भाग से बर्ग तथा ५ के भाग से वर्ण निकालता हुआ बुद्धिमान नाम निकालले। जहां य श वर्ग प्रतीत हों वहां बर्ण निकालते समय ५ की जगह ४ का भाग दे।

प्रकरण पांचवां

संकीर्ण प्रश्नोंमें प्रथम गमन अर्थात् यात्राप्रश्न।

श्रेणीके आदिमें अधरमात्रा प्रथम होतो तुरन्त ही यात्रा बने, उत्तर मात्रा होतो न वने, दग्ध से जाने में दुःख। पिंड को ८ से गुण ७ का भाग दे सम (२।४।६) वचें तो गमन हो, विषम १।३।५ से न हो। अपनी छाया को पैरों से नापे जितने पांव हों उस संख्या को तिगुनी कर १२ जोड दे और उसमें ७ का भाग दे

जो शेष २।४।६ बचें तो देर से जाना हो शून्य से जानेमें तक-लीफ और ३ से डर हो, १ । ५ शेष रहें तो यात्रा अत्यन्त शुभ हो। यदि ऐसा प्रश्न हो कि अमुक आदमी यहां से कहां तक गया है ? तो तिथि को ५ से गुणा वार और नक्षत्र जोड दे भाग ३ का दे शेष १ बचे तो आधी दूर निकल गया, २से सी-मातक ही गया है और शून्य से अपने गांव पहुंच लिया।

प्रवासी अर्थात् आनेवाले का प्रश्न

श्रेणी के वर्णांकों को दूना करे तथा मात्रा के अंकों को तिगुणा कर दोनों को जोड़ ले भाग दो का दे शेष १ हो तो आने वाला बहुत शीघ्र आवे और शून्य हो तो देर से, तथा श्रेणी में जितने अक्षर हों उनकी संख्या को ७का भाग दे शेष १ हो तो आया ही बैठा है, २।४ शेष होंतो रास्ते में, ५।३ शेष होंतो गांव से बाहर हो है और छै (६) तथा शून्य शेष होतो आनेका केवल विचार ही विचार समझे। यदि किसी पाहुने या शत्रु के आने का प्रश्न होतो प्रश्न समय के तिथि वार और पहर जोड ७ का भाग दे ५।४।३ बचें तो आना, २।६।० शेषरहे तो न आना १ से द्विविधा बताए।

गांव या देशसे लहने पावने का प्रश्न

गांव के नामाक्षर तथा पृच्छक के नामाक्षरों को जोड दूने करे और जितनी मात्रा उनमें हों उन्हे चौगुनीकर जोडदेनी

भाग ७ का देना ६।२।० बचें तो साधारण लहना पावना, १ ४ बचें तो सर्वस्व हानि, ५।३ बचें तो दिनोंदिन बढ़ती हो ।

रोगी–प्रश्न ।

श्रेणीके आदिमें उत्तर-मात्रा होतो रोगी अच्छा होजायगा, अभिधूम होतो बहुत दिन बीमार रहकर अच्छा होगा, दग्ध से मृत्यु । तथा श्रेणी के उत्तर और अधर वर्णों की जुदी जुदी राशि बनावे, पहिला अक्षर अधर होतो दोनों को जोडले उत्तर होतो दोनों का अन्तर निकालले और मात्रा के अङ्कों को उनमें जोड भाग ३ का दे शेष १ होतो बहुत शीघ्र आरोग्य हो, २ से बहुत दिन रोग रहे और शून्य से मरण बतावे, तथा पिंड में १ जोड़ २ से गुणा कर ३ का भागदे शेष १ होतो आरोग्य, २ से रोग वृद्धि और शून्यसे मरण ।

दोष पहिचानने के लिये वर्गाङ्क को श्रेणी से गुणाकरे तथा वर्णांक को मात्रा के अंकोंसे गुण दोनों को जोड़दे भाग ४कादे शेष १ होतो वातदोष, २से पित्त, ३ से कफ और शून्य से त्रिदोष जाने ।

दम्पती में पुरुष की मृत्यु पहिले होगी या स्त्री की

ऐसे प्रश्नमें दोनों के नामों की अक्षर-संख्या को जुदी २ रखकर दूनी करले यदि उनके अक्षरोंमें " आ इ ई उ ऊ ए ऐ इन मात्रा ओं में से कोई भी प्रथम हो तो जौन से नाम में है उसी के नामाक्षरों की संख्या को चौगुणी कर दोनों राशियों को जोड़ भाग ३का दे शेष १या शून्य होतो पुरुष की, २से स्त्री की ।

रोगीके लिये त्रिनाडिज्ञान ।

आदिनाडी में आर्द्रा उत्तराफाल्गुनी ज्येष्ठा शतभिषा पूर्वा फाल्गुनी अनुराधा धनिष्ठा भरणी कृत्तिका नक्षत्र गिने जाते हैं; मध्यनाडी में पुनर्वसु हस्त मूल पूर्वाभाद्रपद मघा विशाखा श्रवण अश्विनी रोहिणी, अन्तनाडी में पुष्य चित्रा पूर्वाषाढ उत्तराषाढ उत्तराभाद्रपद रेवती मृगशीर्ष हैं, दिननक्षत्र सूर्य्यनक्षत्र तथा जन्मनक्षत्र तीनों एकही नाड़ीपर होंतो रोगी के शरीर की हानि, सूर्य्यनक्षत्र और जन्मनक्षत्र ही एक नाडी पर होंतो एक पक्ष (१५ दिन) की तकलीफ जन्मनक्षत्र और दिननक्षत्र एक नाडी पर होंतो आठ पहर की तकलीफ समझे ।

प्रश्न समय में रोगीकी कितनी आयु बीतचुकी और आगे कितनी बाकी है ? ऐसे प्रश्न में प्रसंग वश से आयु निकालने की विधि लिखते हैं ।

उत्तराधरमितार्णजपिंडं भिन्नमेव विरचय्य पृथक्स्थं । आधरं त्रिगुणितं शरभक्तं चोत्तरं शरगुणं त्रिहृतं स्यात् ॥ १ ॥ आधरं त्वथ हुताशनभक्तं मूलराशि इह तस्य भवेत्सः । औत्तरं शरगुणं सच राशिस्तस्य नन्दसहितस्य विधेयः ॥ २ ॥ प्रश्नेचेदधरः स्वरस्तदनयोर्योगं यदाचोत्तरा विश्लेषंच विधाय तच्छतकयोर्विश्लेषमायुर्भवेत् ॥ ऊर्ध्वंचेच्छततः शताप्तमवशेषं स्यादथार्णाहतं भाप्तं षड्गुणितं नरस्य जनुषःस्युर्यातवर्षाश्चते ॥३॥ प्रश्नार्णघ्नाः सूर्य्यतष्टाश्च मासास्ते वर्णघ्नाः खाग्नितष्टाश्च तिथ्यः । मात्राङ्कघ्नाः सप्ततष्टाः कुजात्स्युस्तेपिंडघ्नाः षष्टितष्टाश्च घट्यः ॥ ४ ॥

प्रश्नाक्षरो मेंसे उत्तर और अधर वर्णों को जुदा जुदा रखले तथा मात्रा को जुदी रखले श्रेणी में जितने अधर वर्ण हो उन्हे

तिगुना करे और भाग ५ कादे इसी प्रकार उत्तर वर्णों को ५ से गुणाकर ३ से भाग दे अधरोंमें लब्धि को आधर पिंड में जोड़ भाग ३ का देनेसे जो लब्धि हो वह अधरों की मूलराशि है, उत्तर पिंड को लब्धि में जोड जो कि तीनके भागसे प्राप्त हुई है ५ से गुणाकरना तथा ६ जोड देना तो उत्तर वर्णोंकी मूल-राशि प्राप्त होगी, इन दोनों राशियों को यदि श्रेणी के आदिमें अधरस्वर या मात्रा होतो जोडलेनी, उत्तर मात्रा या स्वर आदि में होतो दोनोंका अन्तर करलेना, फिर यदि १०० से अधिक हो तो १०० का भाग देना शेष आयु जानना। जो आयु मिली है उसे श्रेणी से गुणाकर २७ का भाग देना लब्धि मिले उसे ६ गुणा करना यह मनुष्य के जन्म समय से प्रश्न समय तक व्यतीत हुई आयुके वर्ष जानने, इन्हे पूर्व प्राप्त आयुमें घटानेसे भोग्यायु प्रतीत होगी।

दोनों प्रकार की आयु में जिसके मासादि निकालने अभीष्ट हों उसीके वर्षोंको श्रेणी अर्थात् प्रश्नाक्षरसंख्या से गुणा १२का भागदे शेषतुल्य चैत्रशुक्ल-प्रतिपदा से महिनोंकी संख्या जाने, मास संख्या को श्रेणीसे गुण भाग ३०कादे शेषतुल्य तिथि जाने जो शुक्लपक्ष के आरम्भ से गिनी जावेगी, तिथियोंको मात्राके अं-कों से गुणाकर भाग ७ का देना शेषतुल्य मंगलावारादि वार जानने, वारोंको पिंडसे गुणाकर ६०का भाग देना शेष घडियां जाननी।

सुखावबोध के लिए उदाहरण दिखाते हैं। यथा "नारि-केल" इस प्रश्न श्रेणी में अनभिघात संज्ञक होने से उत्तरवर्ण " न ल क " के अङ्क २३ उत्तर पिंड है, अधर वर्ण

केवल "र" है इसकी संख्या ९ यही अ:धर पिंड है, उत्तर पिंड २३ को ५ गुणा किया तो ११५ हुये इन में भाग ३ का दिया लब्धि ३८ फिर पिंड २३ का योग किया तो ६१ हुये ५ गुणा किये तो ३०५ हुए इन में ९ जोड़े तो ३१४ हुए, यह उत्तरमूलराशि हुई।

अधरपिंड ९ को ३ गुणा किया २७ भाग ५ का दिया तो लब्धि ५ हुए इस लब्धि को आधरपिंड ९ में जोड़ा १४ इस में तीन का भाग दिया लब्धि ४ अधरमूलराशि हुई।

उपरोक्त दोनों प्रकार की मूलराशियों (३१४। ४)को जोड़ने से ३१८ हुये जिन्हें १०० का भाग दिया शेष १८ वर्ष की आयु रोगी की है। अब आयु के वर्ष १८ को४ से गुणा किया ७२ भाग २७ का दिया तो लब्धि २ हुई इसको ६ से गुणा किया तो १२ वर्ष गतायु हुई। समग्र आयु १८ में घटाने से शेष ६ वर्ष भोग्य आयु जानना।

मासादि जानने के लिये आयु वर्ष १८ को श्रेणी की संख्या ४ से गुणा किया तो ७२ हुये भाग १२ का दिया शेष शून्य से मास शून्य ही जानना तिथि निकालने को शून्य की जगह १२ कल्पना कर प्रश्नाक्षर संख्या ४ से गुणा किया तो ४८ हुये भाग ३० का दिया शेष १८ से शुक्लपक्षकी प्रतिपदा से गिनने पर कृष्णपक्ष की तृतीया तिथि हुई, इसतिथि संख्या १८ को मात्राङ्क ९ से गुणन किया १६२ भाग ७ का दिया शेष १ से मंगलवार, वारसंख्या १ को पिंड ४१ से गुणाकर ६० का भाग दिया शेष ४१ घड़ी आयु। गतायु या भोग्यायु

निकालनी होतो समग्र आयु की भांति ही प्रक्रिया करलेनी पूर्वोक्त मासादि समय में जन्मकाल से निर्याण जानना।

शेष आयु चैन से कटेगी या दुःख से ? ऐसे प्रश्न में श्रेणी के प्रथम वर्गाङ्क को दूना करना और वर्णाङ्क जोड़ देना तथा ७ का भाग देना यदि शेष विषम अर्थात् १। ३। ५ रहें तो बहुत अच्छी तरह धनादि से युक्त और सम २। ४। ६ बचें तो दरिद्रावस्था में आयु बीतेगी।

जैसे नारिकेल में आदि वर्ग त की संख्या ६ है दूना करने से १२ वर्णाङ्क ३२ जोड दिए तो ४४ हुऐ भाग ७ का दिया शेष २ से दरिद्रावस्था में आयु कटेगी।

—:०:—

लाभालाभ का प्रश्न।

श्रेणी के आदि में उत्तरवर्ण या मात्रा होतो लाभ, अधर होतो हानि, दग्ध से विशेष हानि। मात्रा वर्ण जुदी २ संज्ञा केहों तो मिश्रित फल जानना, जैसे उत्तरवर्ण में दग्ध मात्रा हो तो पहिले लाभ पीछे हानि, दग्ध वर्ण में उत्तर मात्रा होतो पहिले हानि पीछे लाभ, पिंड को तीन का भाग दे शेष एक से लाभ २ से हानि तथा शून्य से दरिद्रता।

स्त्री-प्राप्ति या विवाह-प्रश्न।

श्रेणी के आदि में उत्तर वर्ण तथा मात्रा होतो विवाह बहुत शीघ्र होजावे अधरवर्ण तथा स्वर पहिले होतो बहुत देर में तथा दग्ध से विवाह न होना और मिश्रित से मिश्रित फल जाने।

इसी को अंकों पर बताते हैं—गजाब्धिश्च शशीचांके बिवाहं नास्ति एवच । मुनियुग्मे रसे शीघ्रं शरे विधवा दशे भवेत् ॥ १ ॥ विलम्बन्तु तृतीयेच रुद्रेचैव न संशयः । द्वादशे चैव भंगस्तु प्रश्न-मंकोपरिस्फुटं ॥ २ ॥ इसके अनुसार प्रश्नकर्ता से १२ तक किसी अंक का नाम लिवाले, यदि ८ । ४ । ९ । १ में से किसी अङ्क को बतावे तो जानले कि बिवाह न होगा, २ । ७ । ६ में से बतावे तो विवाह जल्दी होगा, ५ या १० से विवाह तो कहे परन्तु स्त्री विधवा या पहिले अन्य की बिवाहिता मिले, ३ कहे तो देर से और ११ से निस्सन्देह विवाह का होना और शून्य से बनी बनाई बात का विगड़ना बतावे । इसी प्रक्रियाको प्रश्ना-क्षर संख्या पर भी करनी अथवा पिंडको १२ का भाग देकर भी बतानी चाहिये । यह कितने ही केरलशास्त्रकारों का मत है अर्थात् श्रेणी या पिंड को १२ का भागदे शेष से पूर्वकथित फल बतावे।

संतान अथवा गर्भ प्रश्न ।

वर्ण पिंड को मात्रा पिंड से गुणा करे ७ का भाग दे विषमाङ्क १ । ३ । ५ बचें तो गर्भ है और अन्यों से न होना, तथा श्रेणी में प्रथम आलिंगित मात्रा होतो गर्भ में पुत्र, अभिधूम में कन्या और दग्ध से गर्भपात अथवा नपुंसक जाने । यदि श्रेणी के आदि में वर्ग के पंचमाक्षर ङ, ञ, ण, न, म होंतो अवश्य गर्भ हानि हो ।

प्रश्नांकं रविभिर्भक्तं शेषे चैव फलम्वदेत् । सप्तमे नवमे युग्मे षष्ठे चन्द्रेतु कन्यका ॥ १ ॥ तृतीये च शरे पुत्रः दशमेर्धवयासुतः शेषे बन्ध्याविज्ञानीया च्चूड़ामणिपरिस्फुटम् ॥ २ ॥

प्रश्न के अंकों को अथवा पिंड को १२ का भाग दे १।१ २।६।७ बचें तो कन्या, ३।५ बचें तो पुत्र, १० बचें तो थोड़ी ऊमर वाला लड़का और अन्य अंकों से स्त्री को बांझ कहना चूड़ामणि में स्पष्ट लिखा है, परन्तु कोई तो पिंड पर और कोई प्रश्नाक्षर संख्या पर इसे बिचारते हैं।

श्रेणी के आदि में अ वर्ग या च वर्ग में से वर्ण हो तो गर्भ है, शेष से नहीं है। उत्तर वर्ण श्रेणी के आदि में होने से बेटा तथा अधर से बेटी और दग्ध से गर्भपात। जिस स्त्री के गर्भ हो उसके नामाक्षरों को दूनेकर ८ जोड़दे इसमें १५ और मिलाकर ७ का भाग दे, शेष सम हो तो बेटी और विषम से बेटा।

नखैर्युतं गर्भिणी नामदेयं तिथिप्रयुक्तं शरसंयुतञ्च।
एकेनहीनं नवभिर्वियुक्ते समेकुमारी विषमे कुमारः ॥ १ ॥

इसके अनुसार गर्भिणी के नाम में २० जोड़कर वर्तमान तिथि और ५ और जोड़ दे १ घटावे ९ का भाग दे शेष समाङ्क हों तो कन्या और विषमाङ्क से पुत्र जाने। गर्भिणी के नाम में ३६ जोड़कर जितने मनुष्य प्रश्न समय में बैठे हों उनकी संख्या को और जोड़ दे १ घटा ९ का भाग दे शेष सम हों तो बेटा और विषम से बेटी जाने।

चन्द्रोन्मीलने—प्रश्नमात्रा हता वर्णैः तिथिवारेण संयुता। सप्तभिस्तु हरेद्भागं विषमे गर्भ न संशयः ॥ १ ॥ प्रश्न के मात्राङ्क को वर्णांकों से गुणाकर तिथिवार जोड़ दे ७ का भाग देने से विषम बचें तो गर्भ निस्सन्देह है।

—:०:—

दिल्लगी अर्थात् रति का प्रश्न

श्रेणी के आदि में आलिंगित स्वर हो तो मित्र से सुख, अभिधूमित से बाहरी बनावट और दग्ध से हानि। उत्तर और अधर वर्णों के भिन्न २ पिंड बनाले दोनों को परस्पर गुण मात्रा के अंकों से गुणा करे ७ का भाग दे सम बचें तो मिलाप अर्थात् रति में आनन्द मिले और विषम से जुदाई रहे।

भोजन प्रश्न

आलिंगित स्वर श्रेणी के आदि में हो तो मनइच्छा भोजन खूब खाया जाय, अभिधूम से रसोई बढ़िया हो पर खाई न जाय, दग्ध से भद्दी चीजें भोजन में रहने से अरुचि हो भूखा रहै। पिंड को तीन से भाग दे शेष १ हो तो स्वादिष्ट २ से साधारण और शून्य से भूखा। तथा पिंड में पहिले वर्ण की संख्या और जोड़ देनी भाग ६ का देना शेष १ हो तो मिठाई या मिरची अधिक हों, दो से कड़वापन, ३ से कसैला, ४ से खट्टा, ५ से खारी या नोंन विशेष और शून्य से मीठा जाने।

छत्रभंग प्रश्न

श्रेणी के आदि में आलिंगित मात्रा हो तो छत्रभंग न हो अथवा उत्तरवर्ण में अभिधूमित मात्रा हो तोभी छत्रभंग न हो, अन्य दशा में छत्रभंग कहना। वर्णांक को वर्ग के अंकों से गुणा करे तथा वर्णांक को मात्रा के अंक से गुणाकर उस में जोड़ दे दोनों के जोड़ में ७ का भाग दे विषम बचें तो छत्रभंग न हो शेष से छत्रभंग हो। चूड़ामणि कहता है कि श्रेणी में तीसरा

अक्षर उत्तर हो तो युद्ध न हो, अधर से युद्ध में छत्रभंग हो, यदि उसमें आलिंगित मात्रा हो तो १ मास के भीतर, अभिधूम से ६ महीने में और दग्ध से ५ वर्ष में छत्रभंग होना कहै।

देशोपद्रव तथा समय कालका प्रश्न

संयुक्त संज्ञा का प्रश्न हो तो पिंड में १ और जोड़ दे, असंयुक्त में ३, अभिहित में १ तथा अनभिघात में भी १ जोड़ ७ का भाग दे शेष १ बचे तो खेती बिगड़ने से, २ बचें तो बहुत वर्षा होने से, ३ बचें तो सूखा रहने से, ४ बचें तो टिड्डी या कटीड़ से, ५ बचें तो चूहे या कबूतर से, छै बचें तो बीमारी से और शून्य शेष हो तो फौज पलटन द्वारा हलचल मचे, पूर्वोक्त संज्ञाओं के अतिरिक्त संज्ञाका प्रश्न हो तो शान्ति सर्वथा रहै। तथावर्गाङ्क कोमात्राङ्क से गुणा करना एवं वर्गाङ्क को वर्णांक से भी गुणा करना दोनों के गुणनफल को जोड भाग ३ का देना शेष १ होतो सुकाल, २ से साधारण समय और शून्य से अकाल। श्रेणी के आदि में आलिंगित मात्रा हो तो सुभिक्ष, अभिधूमसेमध्यम और दग्ध से दुर्भिक्ष जानना चाहिये।

चूडामणिः—वर्णपिंडं स्वरांकाढ्यं रविभि र्भागमाहरेत्।
अकस्माद्धान्यमुत्पन्नं नागेचैव न संशयः॥ १ ॥
दशैकादश नेत्रेषु धान्योत्पत्ति नाशनं।
नतादृशं समुत्पन्नं नव रामेतु निश्चयः॥२॥
दूरदर्शनमेकेन षट्कृचाब्धेश्च वर्द्धनम्।
सप्तमे बहुधान्यंच नास्तिशून्येच पंचमे॥३॥

वर्ण पिंड में स्वरांक जोडदे और १२ काभागदेवे ८ शेषरहें तो खेतियों में अकस्मात् विना बोया नाज खडा होजाय, १०।११

या २ बचें तो पैदाहुआ भी जल जाय या कातरा खा जाय, ६ । ३ बचें तो ऐसा पैदा हो जैसा कि पहिले कई वर्षों से नहुआ हो, १ बचेतो दीखे बहुत पर पैदा कुछभी नहो, ६ । ४ से खेती बढे बहुत, ७से बहुत नाज और शून्य या ५ के शेष रहने पर कुछ भी पैदा न हो ।

महंगे या सस्तेका विचार

स्फुट पिंड को ३ का भाग देवे शेष १ बचे तो सस्ता, २ से सम; शून्य बचे तो जिस बस्तुके लिए पूछा है वह महंगी होगी । श्रेणीके आदि में आलिंगित मात्रा हो तो जिस बस्तु के लिए पूछागया है वह १ सप्ताह पीछे और दग्ध में छै महीने पीछे सस्ती होगी पहिले खूब महंगी रहेगी । तथा आलिंगित मात्रा से बदनी मन्दी, अभिधूम से उन्ही भावों पर रहे और दग्ध से तेज पटै । स्फुटपिंड में श्रेणी की संख्या जोड भाग ६ का दे शेष१ । २ । ३ हों तो मन्दा, ५ । ४ । ० से तेज जानना ।

जिस महीने में ४ । ६ । १४ तिथि तथा मंगल शनि रविवार अथवा ज्येष्ठा उत्तराफाल्गुनी शतभिषा स्वाति श्रवण नक्षत्रों में सूर्य की संक्रान्ति पलटे उसी में अन्नादि महंगे होवें, तथा संक्रान्ति के दिन जो तिथि वार और नक्षत्र हों उन की संख्या को जोड भाग ३ का दे शेष १ बचे तो सस्ता २ सेबहुत सस्ता औरशून्य से महंगा जाने ।

यह बात सच है या झूठ ?

ऐसे प्रश्न में जिस दिशा की तरफ पूछनेवाले का मुंहहो पूर्वादि क्रम से उसकी संख्या वार नक्षत्र तथा प्रश्न समय में सूर्योदयसे

जौनसा पहर हो उसकी संख्या जोड भाग ८ का दे शेष १।३। ४।६ बचें तो बात सच है और २।५।०।७ शेष हों तो झूठी बात जाने।

काम बनेगा या नहीं?

ऐसे प्रश्न में नक्षत्र तिथि वार और दिशाकी संख्या को जोड ८ का भाग दे शेष ६ । ४ हों तो काम न बने, १ । २ बचें तो जबानी जमाखर्च बहुत हों, ३ । ५ । ७ बचे तो काम बनजाय, शेष शून्य हो तो बनने की बात भी नहो।

राज से मान प्राप्ति का प्रश्न

प्रश्न समय में विष्कुम्भादि योगों में से जौनसा योग हो उसकी संख्या को तिथि वार और दिशाकी संख्या में जोड भाग ८का दे शेष १ । ० । ५ । ६ बचें तो बडा सत्कार और टाइटिल, ३ से बहुत दिन रहने वाला पद मिले, अन्य अर्थात २ । ४ । ७ से मान नहो।

नौकरी वा तरक्की का प्रश्न

प्रश्न समय के नक्षत्र तिथि वार जोड १ और जोड दे ३ का भाग दे शेष १ हो तो नौकरी या तरक्की मिले पर थोडी या थोडे दिनों के लिए, २शेष होंतो बहुत अच्छी या बहुत दिनोंके लिए, शून्य से नौकरी या तरक्की हो ही नहीं।

वर्षा का प्रश्न

श्रेणी के आदि में उत्तर वर्ण और आलिंगित मात्रा हों तोवर्षा अच्छी, अधरवर्ण अभिधूम मात्रा हो तो मध्यम, दग्ध वर्ण

और दग्ध मात्रा से बर्षा का नहोना बतावे और मिश्रित वर्णमा त्रा होने से मिश्रित फल जाने। मात्रा-पिंड को ३ का भाग दे शेष १ होतो सुवृष्टि, २से मध्यम और शून्य से अन बृष्टि बतावे

कूआ बावड़ी खुदाने का प्रश्न

श्रेणीके आदि में आलिंगित मात्रा होतो कूप में मीठा पानी निकले, अभिधूम से खारी और दग्ध से बिलकुल निकम्मा। वर्णों की संख्या कोस्वरों की संख्या से गुणा करना फिर स्वरों की संख्याको उसी गुणित संख्या में जोड़ देनी भाग ७ का देना शेष २।४।६ बचें तो खारी, विषम ३।५।१ से मीठा और शून्य से निकम्मा जाने। इसक्रिया में ७के भाग देने से लब्धि मिले उसे गुणित अङ्क में जोडकर स्वरांकों में जोड़दे तत्पश्चात् ८४ काभाग देना जो शेष बचें उतने ही हाथ नीचे पानी निकलेगा।

लडाई झगने का प्रश्न

श्रेणी में अधिक उत्तर वर्ण होंतो लडाई नहो, यदि हो रही होतो सुलह होजाय, अधर होंतो लडाई हो,दग्ध होंतो खूब लडकर सुलह करें;तथा पिंड में२ काभाग दे शून्य से युद्ध और १ से सन्धि कहनी। दोनों लडने वालों के नामों की संख्या पृथक् २ रखनी, जिसके नाम में पहिले अवर्गीयाक्षर हो उस में १,कवर्गीयाक्षर होतो ५, चवर्ग का हो तो ६,टबर्ग का हो तो ७ तवर्ग का हो तो कुछ भी नहीं, पवर्ग का होतो १, यबर्ग का होतो ३ और शवर्ग काहोतो

२ जोड़ कर दोनों जगह श्रेणी की संख्या तथा पिंड भी जोड़दे और दोनों में ७ का भागदे जिसके अङ्क अधिक शेष रहें वह ही जीतेगा ।

युद्धप्रश्न में विशेष गर्ग मनोरमा में कहते हैं ।

पिंडे नाम समायुक्तेयायी स्थायी यथाक्रमात् ।
शून्ये संधिः समादेश्या युद्धकाले नसंशयः॥१॥

इस कथनानुसार पिंड में यायी और स्थायी दोनों के नामाक्षरों को जोड३ का भागदे शून्य शेष होतो संधि, १ बचेतो यायी की जीत और २बचेंतो स्थायी की जीत बतावे । केरलसंग्रह में स्पष्ट कहाहै— नामाक्षरसमायुक्ते पिंडे रामैर्विभाजित। यायी स्थायी क्रमाज्जेता शून्ये संधिः सदा वदेत् ॥१॥

राम और रावण इन दोनों में से किसकी जीत होगी? इस प्रश्न के उदाहरण को उदाहरणार्थ दिखाते हैं —पिंड १६६४ है इसमें रामके बर्गवर्णाक्षर [र के ६, म के ११, मात्राङ्क २।१ इन सबका योग २३] जोडा तो राम का पिंड १६८७; रावण के बर्गवर्णाक्षर (रके ६, वके ११, णके ६, इनके योग २६ में मात्राओं के अंक २।१।१ कुल ४ जोडे तो ३३ हुए) इन्हें पिंड में जोडा तो रावण का पिंड १६६७ हुआ; इन दोनों पिंडों में अलहदा २ रखकर भाग३ का दिया राम के पिंड में शेष१ है इससे राम की जीत कहनी, रावण के पिंड में शेष २हैं इससे उसकी हार निश्चित हुई ।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से आरम्भ कर प्रश्न समय तक जित नें महीनें बीते हों उन को दूना करे तिथि जोड दे शेष ०।४ रहें तो पूर्व में खडाहोंने वाला, १।५ सेदक्षिण में, २।६ से पश्चिममें,

तथा ३ से उत्तर में खडा होने वाला जीते; कितनों ही का मतहै कि ७ की जगह पूर्वोक्त अंक को४ का भाग दे शेष १ से पश्चिम में, २ से दक्षिण में ३ से उत्तर में और शून्य सेपूर्वमें खडा होने वाला जीतेगा; चाहे लड़ने वाले मनुष्य नहोकर मींढा आदि चतुष्पद वा मुर्ग तीतर बटेर आदि पक्षि ही क्यों न हों।

प्रश्न समय में अपनी छाया को अपने ही पावों से नापले जो पावों की संख्या हो उसमें ४ जोड भाग ८ का दे शेष ६।४।२ हों तो जिस पर चढाई हुई है (मुद्दायला) उसकी जीत हो, ७।५।३।१ बचें तो चढ़ कर आने वाले (मुद्दई) की जीत हो और शून्य शेष होतो संधि कहनी।

सूर्योदय के पीछे जितनी घडी दिन चढा हो उन घडियों की संख्या में ४ जोड भाग ३ का दे शेष १ बचे तो सफेद रंग वाला, २से लाल या गोरा रंगवाला, शून्य से काले रंग वाला जीते, यह पशु पक्षियों में विशेष उपयोगी है। वार तथा पहर की संख्या जोड कर उस में १और मिलाय दे शेष १ होतो गौर, २ हो तो सफेद और शून्य होतो काले रंग की जीत जाननी।

श्रेणी के आदि मध्य और अन्त में दीर्घ मात्रा हों तो पूछ ने वाले की जीत हो और ह्रस्व मात्रा होंतो हार हो; सूक्ष्म पिंड को २का भाग दे शेष १बचे तो पूछने वालेकी जीत और शून्य से हार जाने।

दुर्गभंग प्रश्न

जो संयुक्त संज्ञा का प्रश्न हो और उत्तरवर्ण तथा अभिधूम मात्रा श्रेणी के आदिमें हो तो किला न टूटे, अधर वर्ण श्रेणी के

२ जोड़ कर दोनों जगह श्रेणी की संख्या तथा पिंड भी जोड़दे और दोनों में ७ का भागदे जिसके अङ्क अधिक शेष रहें वह ही जीतेगा।

युद्धप्रश्न में विशेष गर्ग मनोरमा में कहते हैं।

पिंडे नाम समायुक्तेऽयायी स्थायी यथाक्रमात्।
शून्ये संधिः समादेश्या युद्धकाले नसंशयः॥१॥

इस कथनानुसार पिंड में यायी और स्थायी दोनों के नामाक्षरों को जोड३ का भागदे शून्य शेष होतो संधि, १ वचेतो यायी की जीत और २वचेंतो स्थायी की जीत वतावे। केरलसंग्रह में स्पष्ट कहाहै— नामाक्षरसमायुक्ते पिंडे रामैर्विभाजित। यायी स्थायी क्रमाज्जेता शून्ये संधिः सदा वदेत् ॥१॥

राम और रावण इन दोनों में से किसकी जीत होगी? इस प्रश्न के उदाहरण को उदाहरणार्थ दिखाते हैं —पिंड १६६४ हैं इसमें रामके वर्गवर्णाक्षर [र के ६, म के ११, मात्राङ्क २।१ इन सबका योग २३] जोडा तो राम का पिंड १६८७; रावण के वर्गवर्णाक्षर (रके ६, वके ११, णके ६, इनके योग २६ में मात्राओं के अंक २।१।१ कुल ४ जोडे तो ३३ हुए) इन्हें पिंड में जोडा तो रावण का पिंड १६६७ हुआ; इन दोनों पिंडों में अलहदा २ रखकर भाग३ का दिया राम के पिंड में शेष१ है इससे राम की जीत कहनी, रावण के पिंड में शेष २हैं इससे उसकी हार निश्चित हुई।

चैत्र शुक्ला प्रतिपदा से आरम्भ कर प्रश्न समय तक जितनें महीनें बीते हों उन को दूना करे तिथि जोड दे शेष ०।४ रहें तो पूर्व में खडाहोने वाला, १।५ सेदक्षिण में, २।६ से पश्चिममें,

तथा ३ से उत्तर में खडा होने वाला जीते; कितनों ही का मतहै कि ७ की जगह पूर्वोक्त अंक को४ का भाग दे शेष १ से पश्चिम में, २ से दक्षिण में ३ से उत्तर में और शून्य सेपूर्व में खडा होने वाला जीतेगा; चाहे लड़ने वाले मनुष्य नहोकर मींढा आदि चतुष्पद वा मुर्ग तीतर बटेर आदि पक्षि ही क्यों न हों।

प्रश्न समय में अपनी छायां को अपने ही पावों से नापले जो पावों की संख्या हो उसमें ४ जोड भाग ८ का दे शेष ६।४।२ हों तो जिस पर चढाई हुई है (मुद्दायला) उसकी जीत हो, ७।५।३।१ बचें तो चढ़ कर आने वाले (मुद्दई) की जीत हो और शून्य शेष होतो संधि कहनी।

सूर्योदय के पीछे जितनी घडी दिन चढा हो उन घडियों की संख्या में ४ जोड भाग ३ का दे शेष १ वचे तो सफेद रंग वाला, २से लाल या गोरा रंगवाला, शून्य से काले रंग वाला जीते, यह पशु पक्षियों में विशेष उपयोगी है। बार तथा पहर की संख्या जोड कर उस में १और मिलाय दे शेष १ होतो गौर, २ हो तो सफेद और शून्य होतो काले रंग की जीत जाननी।

श्रेणी के आदि मध्य और अन्त में दीर्घ मात्रा हों तो पूछ ने वाले की जीत हो और ह्रस्व मात्रा होंतो हार हो; सूक्ष्म पिंड को २का भाग दे शेष १बचे तो पूछने वालेकी जीत और शून्य से हार जाने।

दुर्गभंग प्रश्न

जो संयुक्त संज्ञा का प्रश्न हो और उत्तरवर्ण तथा अभिधूम मात्रा श्रेणी के आदिमें हो तो किला न टूटे, अधर वर्ण श्रेणी के

आदि में होऔर आलिंगित मात्राहो तथा संयुक्तसंज्ञक प्रश्न होतो सहज में कोटभंग हो जाय, इनसे अतिरिक्त संज्ञाका प्रश्न हो तो घोरयुद्ध होकर गढ़ टूटे।

वर्णाङ्क को किले के जितने बुर्ज हैं उनकी संख्या से गुणना और श्रेणी की संख्या जोड़ ७ का भाग देना सम २।४।६ शेष होंतो कोट भंग हो, अन्य शेष से किला नटूटे, तथा पिंड में बुर्जों की संख्या जोड़ ८ का भाग दे १ बचे तो पूर्व दिशा की बुर्ज, २ से अग्नि कोण, ३ से दक्षिण, ४ से निऋृति कोण, ५ से पश्चिम, ६ से वायु कोण, ७ से उत्तर और शून्य से ईशान कोण की बुर्ज पहिले टूटे, अथवा पिंड को बुर्जों की संख्या से भागदे शेषतुल्य पूर्वादि दिशाओं की बुर्जों का भंग बतावे; तथा बुर्जों की संख्या में स्वरांक जोड़ ३ का भाग दे शेष १ बचे तो युद्ध से कोट का भंग होना, २ शेष हों तो डर से खाली करना और शून्य से सुरंग द्वारा उड़ादेना निश्चित हो।

शिकार का प्रश्न

दग्ध मात्रा युक्त क ट प श वर्गीय अक्षर श्रेणी के आदि में होतो जाल में फंसकर या किसी अन्य रोक थाम से शिकार मारा जाय, अधर वर्ण या मात्रा पहिले होंतो खुला हुआ, और दग्ध वर्ण या आलिंगित मात्रा आदि में हो तो शिकार न मिले। केवल पिंड अर्थात् विना गुणांक से गुणित को१६ गुणा कर ७का भाग दे जो विषम बचें तो शिकार मिले और सम बचें तो न मिले। शिकार का नाम बताना होतो नाम प्रबन्ध प्रक्रिया से बतावे।

———

गडेहुए धन का प्रश्न

जो श्रेणी में आलिंगित मात्रा अधिक हों तथा आलिंगित वेला में प्रश्न होतो जहां पूछनेवाले ने पूछा है वहां धन गड़ा हुआ है और मिल भी जायगा अन्यथा नहीं।

गड़ा हुआ धन मकानके कौनसे कोने में है? इसकी प्रक्रिया इस प्रकारहै।

रेखाः सप्तोर्ध्वगाः कार्याः नवतिर्यक् तथा लिखेत्।
अष्टाधिकाश्चत्वारिंशत् कोष्टकाः स्युस्तथा क्रमात् ॥१॥
अकारादिविसर्गान्तश्चतुष्कोणे तथा लिखेत्।
ककारादीं स्तथा वर्णाल्लिखेच्छेषे बुधः क्रमात्॥२॥
कृशानुः३ सायकाः ५ सप्त७ नव ९ शर्वा ११ स्त्रयोदशः।
अन्वयव्यतिरेकाभ्यां सर्वत्र पूरयेत्सुधीः ॥३॥
प्रश्नाद्यक्षरतो ज्ञेयं कोष्टकांक मर्नाषिभिः।
कोष्टध्रुवघ्नपिंडेतु वेदांगैर्गुणयेत्ततः ॥४॥
भजे दष्टाब्धिभिः शेषाद्द्रव्यकोष्टस्य चिन्तनम्।

सातसीधी और नौ ठेढी रेखा खेंचने से ४८ कोठे हो जातेहैं इनमें अकारादि स्वरों को तो कोणोंमें लिखना चाहिए और व्यंजन वर्णोंको यथा क्रमसे, इनके साथमें अंक होते हैं ३।५।७।९।११। १३ क्रमऔर व्युत्क्रम से सो चक्रसे जानकर श्रेणीके प्रथमाक्षर के अंकको पिंडसे गुणाकर ४८ का भाग दे शेषतुल्य कोष्टकमें स्थान के चक्रसराषे विभाग कल्पना कर ईशान दिशासे पहिले कोष्टक को आरम्भ कर गडा हुआ धन जानले।

उदाहरण—दाडिम इस प्रश्न श्रेणी का पिंड १६६४ प्रथम अक्षर "द" के अंक ३से गुणा ४९९२ भाग४८ का दिया शेष

अड़तालीसवां कोष्टकहै इसे ईशान दिशा से गिनते हुए चक्र की तरह स्थान में जहां अड़तलीसवां कोष्ट है वहां ही गड़ा हुआ धन बताना। इस उदाहरण से उत्तर दिशा में धनका सम्भव है।

॥ चक्रोद्धारः ॥

अ ३	क ५	ख ७	ग ९	घ ११	आ १३
ङ १३	उ ११	च ९	छ ७	ऊ ५	ज ३
झ ३	ञ ५	ओ ७	औ ९	ट ११	ठ १३
ड १३	ढ ११	ण ९	त ७	थ ५	द ३
ध ३	न ५	प ७	फ ९	ब ११	भ १३
म १३	य ११	अः ९	अं ७	र ५	ल ३
व ३	ऐ ५	श ७	ष ९	ए ११	स १३
ई १३	ह ११	क्ष ९	त्र ७	ज्ञ ५	इ ३

मकान और बगीचा संबंधी प्रश्न

उत्तर वर्ण और आलिंगित मात्रा श्रेणी के आदिमें हों तो मकान उत्तम और बसने में लाभदायक हो और बगीचा बहुत अच्छा लगे, अभिधूम मात्रा या अधर वर्ण हों तो मकान या बगीचा देर

में तैय्यार हो, दुग्ध से बनना कठिन या आवाद होना मुश्किल हो, तथा पिंड को ३ का भाग दे शेष १ से उत्तम, २ से मध्यम और शून्य से निकृष्ट। वर्ण और मात्रा उपरोक्तानुसार न होकर मिश्रित हों तो मिश्रित फल कहे।

चौर प्रश्न

संयुतादि गज संख्याघ्नीसंख्यया स्वरवर्णजा। युक्ताच पूर्वं पिंडेन पिन्डं तस्करहृद्धने ॥ १ ॥ संयुक्तादि आठ संज्ञाओं में से जिस संज्ञा का प्रश्न हो उसकी उन संज्ञाओं में जौनसी संख्या हो उससे वर्ण तथा मात्रा की संख्या को गुणाले फिर पूर्व पिंड में जोडदे तो चोरी के बताने के लिए पिंड बनता है। जैसे "नालिकेर" इस श्रेणी में अनभिघात संज्ञक प्रश्न है जहां आठ संज्ञा मानी हैं वहां अनभिघात को अभिघात के अन्तर्गत केरल में बताया गया है इस लिए इसकी पांचवी संख्या हुई अतएव ५ से वर्ण संख्या ४ को गुणा तो २० हुए, मात्राकी संख्या ४ से भी ५ को गुणन किया तो २० हुए, दोनों को जोडा तो ४० पहिले पिंड ४१ में मिलाया तो चोरी बताने के लिए पिंड ८१ हुआ। इसमें २का भाग दिया शेष १ होने से खोई वस्तु मिलजाय ऐसा कहना, यदि शून्य होती तो चोरी का न मिलना बताते।

तथा चोरी के पिंड को जिस संज्ञा का प्रश्न है उसके गुणाक से गुणा करना स्वरांक जोड ७ का भाग देना शेष विषम बचेंतो नष्टद्रव्य की प्राप्ति और सम से न मिलना जाने। जैसे ८१ को अनभिघात के गुणाक १७ से गुणा १३७७ इनमें स्वरांक ९ युक्तकिए तो १३८६ हुए; अब इनमें ७का भाग देने से शेष शून्य बचा यह

शून्य ७ का स्थानापन्न होनेसे विषम है इसलिए चोरी गई या खोई हुई वस्तु मिलजाय।

कैसी ठोर और किस दिशामें वस्तु है ? इसको कहते हैं।
प्रश्न रत्ने आलिंगिते नेहसि वर्णपिंडे श्रेणीहते नागहते वशेषात्।
पूर्वादि दिक्चेदभिधूमितं स्यादर्कघ्न मात्राङ्कयुगर्ण पिंडम् ॥ १ ॥
प्रश्नाक्षराढ्ये गजशेषितः स्यात्पूर्वादिदिक् चेदिह दग्धवेला।
स्यात्केवलं पिंडइभाप्त शेषे पूर्वादिदिक् नष्टधनेच चौरे॥२॥

यदि प्रश्न समय में आलिंगित बेलाहो अर्थात् १० घड़ी से अधिक दिन चढाहोतो वर्ण पिंडको श्रेणी से गुणाकर ८ का भागदे और शेष से पूर्वादि दिशाजाने; अभिधूमित कालमेंअर्थात् १०घडी दिनचढे पीछे २०घडी दिनचढे तक प्रश्न होतो वर्ण पिंडको १२ से गुणाकर मात्रा के अंकजोड़ प्रश्नाक्षर जोड़दे तथा ८का भागदे शेष से पूर्वादि दिशाजाने; जो दश घडी पिछली में अर्थात् २० घडीदिन चढे पीछे सायंकाल तक यानी दग्ध बेलामें प्रश्न होतो केवल वर्ण पिंडको आठ ८ का भागदे और शेष से दिशा समझले। किसी२ ने प्रथमाक्षर सम्बन्धिनी मात्रा के आलिंगितादि होनेपर भी यह क्रिया कही है।

उदाहरण—नालिकेर इसश्रेणी में वर्णपिंड ३२ है आलिंगित काल होनेसे श्रेणी की संख्या ४ से गुणा किया तो १२८हुए, भाग ८ का दिया शेष शून्य से जाना कि आठवीं दिशामें यानी पूर्वादिक्रम से गिनने में जोदिशा प्राप्तहै उसमें (ईशान कोणमें) चोरी गया माल या खोई हुई वस्तु है।

"संयुक्तेगृहमध्ये द्रव्यं स्यान्नोह्यसंयुक्ते" इत्यादि वाक्यों से कहा जा सकता है कि जो संयुक्त संज्ञाका प्रश्न होतो खोया हुआ

माल अपने घरमें ही है अथवा चोरी गई वस्तु चोरके घरमें है; असंयुक्त संज्ञाका प्रश्न होतो उसके घरमें नहीं किसी दूसरी जगह है या किसी दूसरे आदमी को देदी है अभिघात वा अनभिघात होतो माल गला दिया गया, अन्य संज्ञाओं में रूपान्तर करदिया बताना। जो प्रथम मात्रा आलिंगित होतो भींत (दीवार) में, अभिधूमित होतो जमीन में और दग्ध होतो डिब्बे या पिटारी में अथवा सन्दूक में रक्खी है।

इसीको पिंडद्वारा भी कहते हैं—श्रेणी वर्गपिंडे स्यान्मात्राढ्यं युगैर्हतम् । गृहमध्ये कुमध्ये चोर्ध्वदेशे तस्करालये ॥ १—

इसके अनुसार वर्गपिंडको श्रेणी से गुणाकर मात्राङ्क जोड़दे और भाग ४का दे यदि शेष १बचे तो वस्तु घरमें ही है चोरीनहीं गई, २बचेंतो जमीन में गाड़ी हुई, ३होंतो छत्त के ऊपर और शून्य से चोर के घरमें जाने। उदाहरण —"नालिकेर" इसमें वर्गपिंड २५ को श्रेणी की संख्या ४से गुणनकिया १०० मात्राङ्क ६ को जोडे १०६ हुए इनमें भाग४ का दिया शेष १से चोरीहुईवस्तु घरमें ही है।

—:o:—

चोरों की संख्या का ज्ञान।

संयुक्ताद्यष्टभिः प्रष्णैश्चोरसंख्या वदेद्बुधः साङ्काब्ध्यर्णं काढ्यंत्रज्हतिनागहृता तथा ॥ १ ॥ संयुक्तादि आठसंज्ञाओं से चोरों की संख्या कहै अर्थात् संयुक्त संज्ञा का प्रश्न हो तो १ चोर है, असंयुक्तसे २, अभिहित से ३, इसी प्रकार अन्य से भीजाननी तथा इसका पिंडव्यवहार यह है कि वर्णाङ्क में ४६ जोड़ प्रथम स्वराङ्कसे गुणन कर ८का भागदे शेष रहैं उतने ही चोर बताने; जैसे

नालिकेर इस श्रेणी की वर्णाङ्क संख्या ३२ में ४६ जोड़े तो ७८ हुए पहिले वर्ण में मात्रा "आ" होनेसे स्वराङ्क २ हैं इससे गुणा किया तो १५६ हुए इसको भाग ८ का दिया शेष ४ रहे यहही चोरसंख्याहै।

चोरके नाममें कितने अक्षरहैं तथा पहिला अक्षर कौनसे बर्ग में है? इसको कहते हैं

उत्तरार्णाधराज्योगे समांकं व्यत्यये न्यथा। समांकं स्यादुत्तरयोः परयोर्विषमार्णायुक्॥१॥ जो श्रेणी में उत्तर बर्ण अधर मात्रा युक्त होतो नाममें सम अक्षर २।४।६।८।१० हैं, बर्ण भी उत्तर और मात्रा भी उत्तर ही हो तोभी पूरे अक्षरों का नाम है चाहे २का हो चाहे ४ का या छैका या आठका; यदि मात्रा और वर्ण दोनों अधर होंतो विषम अक्षरोंका नाम हो अर्थात् ३।१।५।७ का हो। पिंडे सप्तहृतं वास्यात्संख्या तन्नामवर्णजा—इस वाक्यके आधार पर पिंडमें ७ का भागदेने से जो शेष रहता है उतने ही अक्षर चोर के नाममें कहने।

चौरमितिघ्नाश्रेणीपिंडेनाढ्याष्टभि स्तष्टा कष्टागांगे ष्वग्न्यब्ध्यश्विमितैः शेषितैर्ज्ञेयः ॥१॥ आदिष्वासादिमबर्णावर्गेषु मौढचौरस्य। चौर संख्या से श्रेणी को गुणा करे पिंडमें जोड़ ८ काभागदे १ बचेतो नाम का प्रथमाक्षर अबर्ग में है, ८ से कबर्गमें, ७ से चवर्गमें, ६ से टवर्ग में, ५ से तवर्ग में, ३ से पवर्ग में, ४ से यवर्ग में, तथा २ शेष हों तो शवर्ग में नामाक्षर है। जैसे "नालिकेर" इसश्रेणीमें श्रेणी संख्या ४ तथा चोर संख्या भी ४ही है दोनों को परस्पर में गुणातो १६ इसे पिंड ४१में जोड़ दिया ५७ भाग ८का देने से शेष १ है इसलिए मुख्य चोर के नाममें प्रथमाक्षर अबर्ग के बर्णों में से है। आगेकी सब प्रक्रिया नामबन्ध प्रकरण से जानलेनी।

सम्पूर्ण प्रश्नों में उपयोगी अवधिज्ञान

मनोरमा में गर्ग भगवान् का कथनहै—ग्रहध्रुवघ्ने पिन्डेतु चन्द्रागैर्भागमाहरेत् । लब्धाङ्काद्वधिर्ज्ञेया प्रश्नकाले मनीषिभिः ।

अर्थात् पिंड को ग्रह के ध्रुव से गुणा कर ७१का भागदे जो लब्धि मिले उसको बुद्धिमान अवधि जानले। ग्रहों के ध्रुव केरलागममें इसप्रकार कहे हैं—रसघ्ने त्वष्टयुक्पिंडे सप्तभक्ते क्रमाद्ग्रहाः पंच ५ सर्गे२१न्द्र १४ गो९ नाग८ वन्हि३ रुद्राः११ क्रमाद् ध्रुवाः ॥१॥ पिंडको ६ गुणाकर आठ जोड़ भाग ७ का दे शेषरहै वह सूर्य सेगिणाकर ग्रह जाने, ध्रुवाङ्क यों हैं-सूर्य के ५ चन्द्रमाके२१ मंगल के१४, बुध के९, बृहस्पति के८, शुक्र के३, और शनि के ११ जो अवधि प्राप्त हुई है वह वर्ष मास दिन आदि किस रूप में है उसी को कहते हैं—आरदिवाकरशेषे पक्षाः दिवसाश्च शुक्रेन्द्वोः। मासाःगुर्वशेषे सौम्ये ऋतवः शनैश्चरेऽब्दाःस्युः ॥१॥ आधाने शत्रुजये लाभालाभे गमागमेरुजिवा। कालं कार्ये प्रवदेत् सर्वत्रैव सदाविद्वान् ॥२॥ जो पहिली कही हुई रीति के अनुसार मंगल या सूर्य का ध्रुव होतो जो लब्धि आई है वे पक्ष हैं, शुक्र और चन्द्रमासे दिन तथा बृहस्पति के ध्रुव शेष होंतो महीनों की, बुधसे ऋतु और शनिसे वर्षपरिमितावधि विद्वान् लभालाभ गमागम जयाजय आदि सब प्रश्नों में कहदेवे।

प्रश्न संग्रह में और विशेष कहाहै—दिनदृष्टेतु यल्लब्धं मूले योज्यंबराग्निभिः। बिभजेद्दिवसो वाच्यः शेषतुल्योऽत्र सूरिभिः ॥ १ ॥ लब्धं मूले पुनर्योज्यं भजेच्च सप्तभिर्बुधैः। शेषतुल्योऽत्र वारः स्याच्छुक्लकृष्णादिभेदतः॥२॥ शुक्लकृष्ण क्रमेणैव

गणयेद्गुरुशुक्रयोः । लब्धं मूले पुनर्योज्यं षष्टिभिर्विभजेत्ततः॥३॥ शेष तुल्योऽत्र घटिकाः विज्ञेयाः सर्वदा बुधैः । पक्षे शरेन्दुभिर्भागे- र्मासंद्दष्टेर्केतो भजेत् ॥ ४ ॥बर्षे द्दष्टे शतैर्भागो शेषंपूर्वोक्तमेवच ।

इसका अभिप्राय यहहै कि पिंडको ६गुणाकर ८ जोड़ ७का भागदेनेसे शेष १ या ६ रहैं तो चन्द्रमा या शुक्र का ध्रुव होने से दिनों के भींतरही अवधि होगी इसलिए जो सातके भाग से लब्धि मिली है वह पिंडमें जोड़ भाग ३० का दे शेष परिमित दिन होंगे, तथा जो ३० के भागसे लब्धि हो वह मूल में फिर जोड़ भाग ७ का दे शेषतुल्य जो शुक्लपक्ष होतो गुरुवारादि वारजाने, कृष्ण पक्ष हो तो शुक्रवारादि बारजाने, लब्धि को मूलमें जोड़कर ६० का भागदे शेष घड़ीजाने, इसी भांति यदि पूर्वोक्त प्रक्रिया से पक्षज्ञान होतो भाग १५ का, महीनों में १२ का, वर्षों में १००का दे क्रिया करे ।

उदाहरण—चंपा इसश्रेणी का पिंड २०० छै गुणा किया १२०० आठ जोड़े १२०८ भाग ७ का दिया लब्धि १७२ शेष ४ से बुधका ध्रुव हुआ ९ इसको पिंडसे गुणाकर ७१का भाग देने से लब्धि २५ ऋतु हैं। दूसरे पक्षका उदाहरण—कल्पित पिंड १६६४ को छैगुणा किया ९९८४ आठजोड़े ९९९२ भाग ७ का दिया शेष ३ से मंगल का ध्रुव है जिसकी अवधि दिनादि होती है इसलिए सूर्य चन्द्रमा मंगल इन तीनों के ध्रुवों का जोड़ ४० है इसको सम्पूर्ण ग्रहों के ध्रुवों के जोड़ ७१ में से घटाया तो ३१ बचे उन्हें पिंड १६६४ से गुणा किया ५१५८४ भाग ३० कादिया लब्धि १७१९ शेष १४ दिन अवधि के हुए इसके बाद घड़ियां निकालने को लब्धि १७१९ को मूल पिंड

५१५८४ में जोड़ा तो ५३३०३ हुए भाग ६० का भाग दिया लब्धि ८८८ शेष २३ घड़ी, इस प्रकार १४ दिन २३ घड़ी जानी गई। जिस भांति दिनों में ३० का भाग दिया गया उसी भांति यदि अवधि में महीने प्रतीत होंतो १२ का भाग दे शेषतुल्य दिन जानलो फिर लब्धि मूलमें जोड़ ६० का भागदे कर शेष घड़ी जानो। वर्ष परिमिता अवधि होतो १०० का भाग दे शेष से वर्ष महीने आदि पूर्ववत् लब्धि मूल में जोड़ निकाललो। पक्षपरिमितावधि प्रतीत होतो उसकी क्रिया कुछ विशेष है। यथा—उदाहरणार्थ कल्पित पिंड १६६४ को भाग २ का दिया शेष ० (अर्थात् शून्य की जगह २ की कल्पना करने) से कृष्ण पक्ष जाना, लब्धि ८३१ पिंडमें जोड़े २४९५ भाग १५ का दिया लब्धि १६६ शेष ५ इसलिए पञ्चमी तिथि, लब्धि १६६ पिंडमें जोड़ी तो १८३० भाग ७ का दिया तो लब्धि ३६१ और शेष ३ रहे इससे कृष्णपक्ष होने के कारण शुक्र वारादि गिनने पर रविवार प्रतीत हुआ, लब्धियुक्त पिंड १९२५ में भाग ६० का देने से लब्धि ३२ शेष ५ घड़ी, लब्धियुक्त पिंड १९१६ में भाग ६० का दिया तो शेष ५६ रहे इन्हें पल जानो। और भी सुगम रीति कहते हैं—श्रेणी के आदि में उत्त वर्ण होने से उत्तरायण अचर होने से दक्षिणायन, स्वर अ आ होंतो बसंत, इ ई से ग्रीष्म, उ ऊ से बर्षा, ए ऐ से शरत्, ओ औ से हेमंत और अं अः से शिशिर ऋतु जाननी। ह्रस्व मात्रा से ऋतु का पहिला महीना और दीर्घ से दूसरा। किसी किसी का ऐसा भी मत है कि श्रेणी के आदिमें अवर्गीय अक्षर हो तो बसन्त, कवर्गीय से ग्रीष्म, चवर्गीयसे बर्षा, टवर्गीयसे शरत्, तवर्गीयसे हेमन्त और पवर्गीय से शिशिर तथा यवर्गीय से बर्षा और शवर्गीय से शरत् जाने।

तथा मात्रा जोड ४ गुणा कर अंतिमाक्षर के वर्ग से गुणा करे तथा १०३ जोड १५ घटा ८८ जोड भाग १२ का दे शेष से कार्तिकादि महीने, इसीभांति पूर्वोक्त अंक में १०३ की जगह ७३ जोड भाग २ का दे शेष १ से कृष्ण पक्ष २ से शुक्ल पक्ष जाने, तथा ५८ जोड़ १५ के भाग से तिथि, तथा ३२ जोड ४३ मिला ७ का भाग दे शेष से वार, २८ जोड १२ का भाग दे शेष से लग्न, तथा १०८ जोड १२ मिला २८ के भाग दे शेष-तुल्य कृत्तिकादि नक्षत्र जानले।

यह स्त्रीकी जन्मपत्रीहै या पुरुषकी ?

ऐसे प्रश्न में "जन्मलग्नांक मध्येतु राहुसंख्यांकसंयुतं। रविराश्यंकयोगेन पिंडसंख्या भवेदिति ॥ १ ॥ स्थापयेत्पिंडमंकन्तु रामभक्तावशेषकम् "। इस वाक्य के अनुसार जन्मलग्न सूर्य की राशि तथा राहु की राशि जोड भाग ३ का दे शेष १। ० बचें तो पुरुषजन्म, २ बचें तो स्त्रीजन्म जाने।

मरे हुए की जन्मपत्री है या जीवित की

जन्मलग्नाङ्कप्रश्नांकं प्रश्नाक्षरसमन्वितम्। अष्टमस्वामि-गुणितेन लग्ननाथेन भाजितम् ॥१॥ विषमे जीवितं विद्यात्समे नास्तीति निश्चयः। इसके अनुसार प्रश्नलग्न जन्मलग्न और प्रश्नाक्षर जोड़ जन्मलग्न के अष्टमेश की राशि से गुणाकर लग्नेश की राशि संख्या से भाग दे शेष विषम बचें तो जीवित और सम से मृतक की जाने।

उपसंहारः ।

आद्ये गौडकुले नितान्तविमले पूतं तिवाड़ीपदम्
धत्ते श्रीशुकदेवसूनु भणितः लालान्तचुन्नीयथा ॥
संक्षिप्तां खलु केरले कृतिमिमां कानौड़नगरे बसन्
स्पष्टां शैलनगाङ्कभूपरिमितेऽब्दे वैक्रमीयेऽकरोत् ॥१॥

शुभम्भवतु

पता—

मैनेजर,
ज्योतिष कार्य्यालय महेन्द्रगढ़,
(पटियाला)

पं० कुंजविहारीलाल शर्म्मा,
प्रोप्राइटर
रतन यन्त्रालय कूंचा घासीराम, देहली ।

" यदिहास्ति तदन्यत्रयन्नेहास्ति नतत्कचित् "

इस कहावत को पूरा करने वाला ज्योतिष का अनूठा ग्रंथ " वर्षविचार " अठारह ताजक का सार एक धनिकोदार की सहायता से छपजाने के कारण केवल बारह आनेमें ।

नाम पुस्तक	मूल्य
प्रश्नशिरोमणि—लग्न से प्रश्न बताने की प्रक्रिया ।	।)
शुकस्वरोदय—समग्र स्वरोदय ग्रन्थों के मन्थन करने से बडे ही काम की चीज होगई	=)
हिन्दु विवाहपद्धति—केवल भाषा जानने वाला भी भली भांती व्याह करा सकता है अनेक भाष्योंसे मन्त्रार्थ समयानुकूल, भूमिका तो पढने योग्य अनोखी वस्तु है ।	।-)
सावित्री— महाभारत से उद्धृत केवल भाषा में ।	।-)
दुर्गा चरित- छोटासा उपन्यास	-)
आत्मा की पुकार—छोटासा उपन्यास ।	=)
तमाखूसमीक्षा—पढने की चीज है	=)
सुलफा	-)
राजभक्ति-हिन्दुओं के पालिटिक्स का खजाना	।=)

नोट—पूर्वोक्त पुस्तकें सिवाय इस कार्यालय के कहीं भी न मिलेंगी ।

मैनेजर,

ज्योतिष कार्यालय महेन्द्रगढ

(पटियाला)